तिरुमल-तिरुपति देवस्थान की मास - पत्रिका

श्री कपिलेश्वर के मन्दिर मे फिलहाल सपन्न कुभुाभिषेक में भाग लेते हुए देवस्थान के कार्य निर्वहणाधिकारी श्री पी वी आर. के. प्रसाद और उप-कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री एन. नरसिंहा राव।

★

श्री देवी कामाक्षी को स्वर्णसमर्पण

ता० १९-१-७९ को देवस्थान के न्यासमण्डल के अध्यक्ष डा० रमेशन् और कार्य-निर्वाहणाधिकारी श्री पी. वी. आर, के. प्रसाद जी देवस्थान की ओर से श्री कांचि-कामाक्षी मन्दिर के विमान गोपुर की मुलायम केलिए ३ किलो सोना जगद्गुरु श्री श्री श्री जयेन्द्र सरस्वती को प्रदान करने वाला दृश्य।
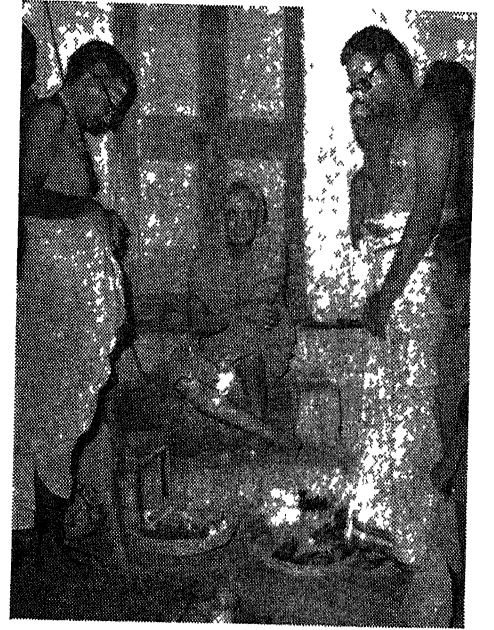
डा० रमेशन्, स्वामीजी, श्री प्रसाद जी

सोने को समर्पित करने के पहले और एक बार तोलकर देख रहे हैं। देवस्थान के पब्लिक रिलेशन अफीसर आदि चित्र में हैं।
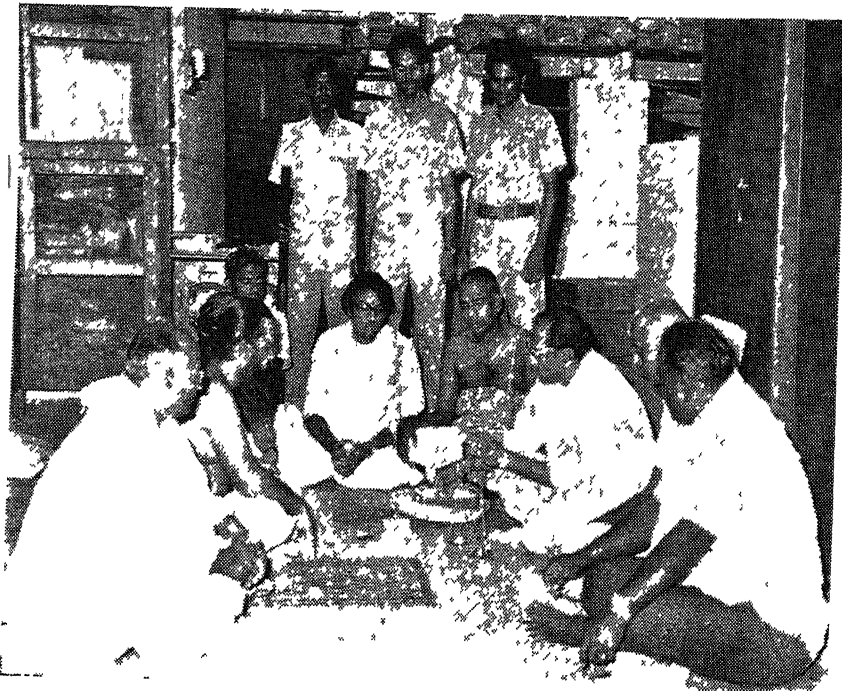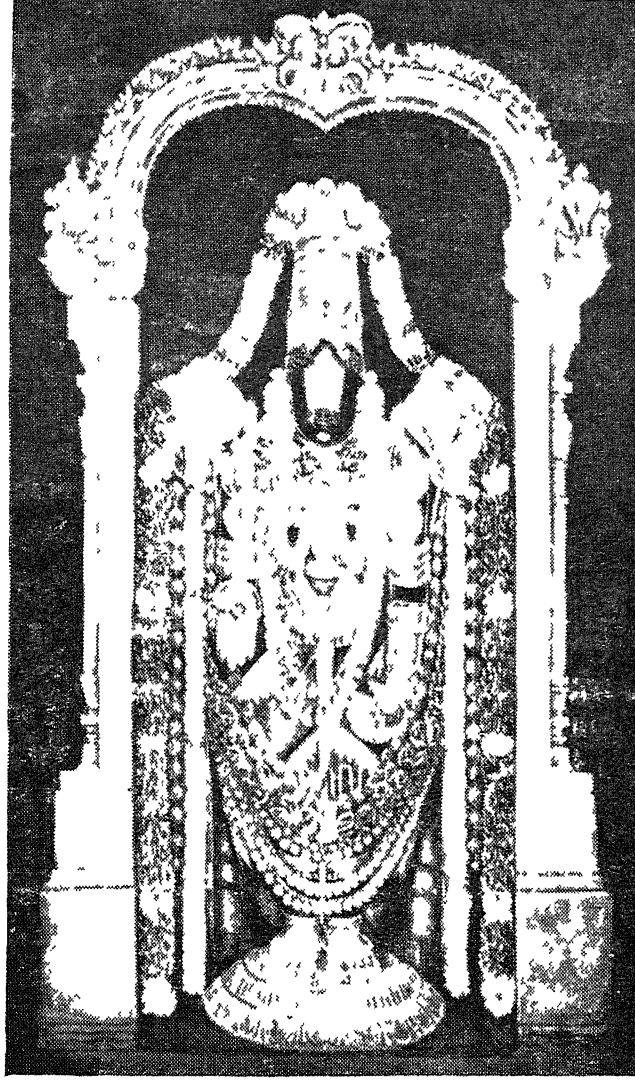
श्रियःकान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम् ।

श्रीवेङ्कटनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥
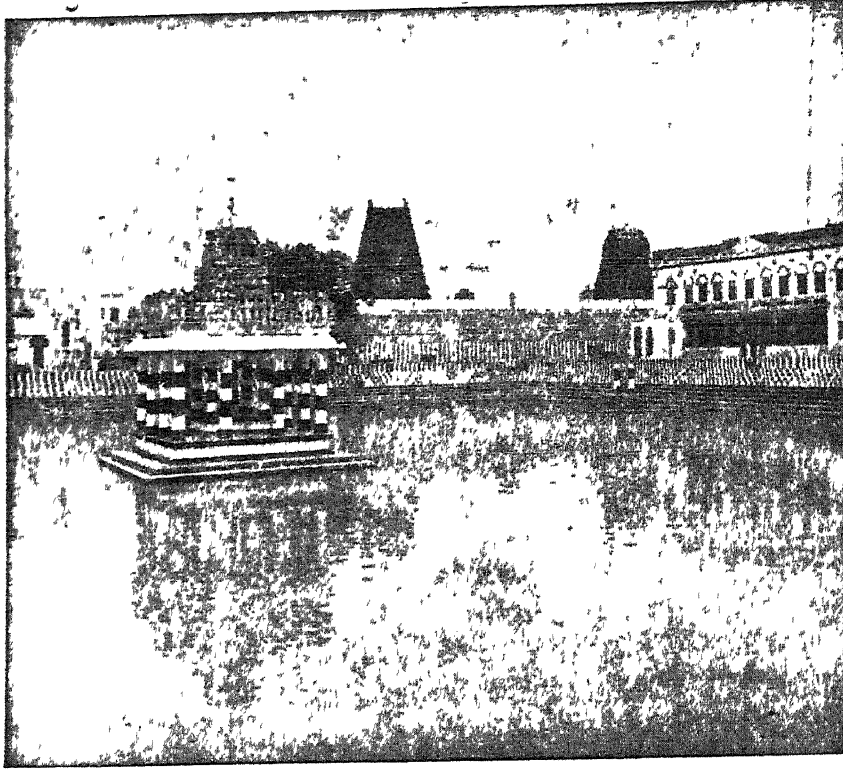
श्रीपद्मावती देवी का मंदिर, तिरुचानूर.

।। दैनिक कार्यक्रम ।।

प्रात	5–00	बजे से	5–30	बजे तक	..	सुप्रभात
,,	5–30	,,	6–00	,,		सहस्रनामार्चना
,,	6–00	,,	6–30	,,	...	पहली घटी
,,	6–30	,,	9–00	,,	.	सर्वदर्शन
,,	9–00	,,	11–00	,,	.	अर्चना (अष्टोत्तर)
,,	11–00	,,	1–00	,,		सर्वदर्शन
मध्याह्न	1–00	,,	1–30	,,		दूसरी घटी
,,	1–30	,,	4–00	,,		सर्वदर्शन
शाम	4–00	,,	6–00	,,		दूसरी अर्चना (अष्टोत्तर)
रात	6–00	,,	7–00	,,		सर्वदर्शन
,,	7–00	,,	7–30	,,	. .	तीसरी घटी
,,	7–30	,,	8–45	,,		सर्वदर्शन
,,	8–45	,,	9–00	,,		एकातसेवा ।

शुक्रवार के दिनों में

सुबः	11–00	,,	12–00	,,		सर्डालिपु
मध्याह्न	12–00	,,	1–00	,,		देवी का अभिषेक
,,	1–00	,,	2–00	,,	.	समर्पण तथा दूसरी घंटी

(१) सहस्रनामार्चन टिकेट की दर — रु. 6-40. एक टिकेट से चार व्यक्ति प्रवेश पा सकते है ।

(२) अष्टोत्तरनामार्चन टिकेट की दर — रु 1 – 15 एक टिकेट से चार व्यक्ति प्रवेश पा सकते है ।

(३) सर्वदर्शन के समय एक आरती टिकेट की दर — 0–40 पै । इस सूचना के द्वारा यात्रियो को बताया जाता है कि रु 13–12 से बढकर जो भेंट भगवान को समर्पण किया जाता है वह देवस्थान में पहुँच जाता है । इस तरह भेटो को समर्पण करने की इच्छा रखने वाले आफीस में पैसा अदा करके रसीद भी पा सकते है ।

सप्तगिरि
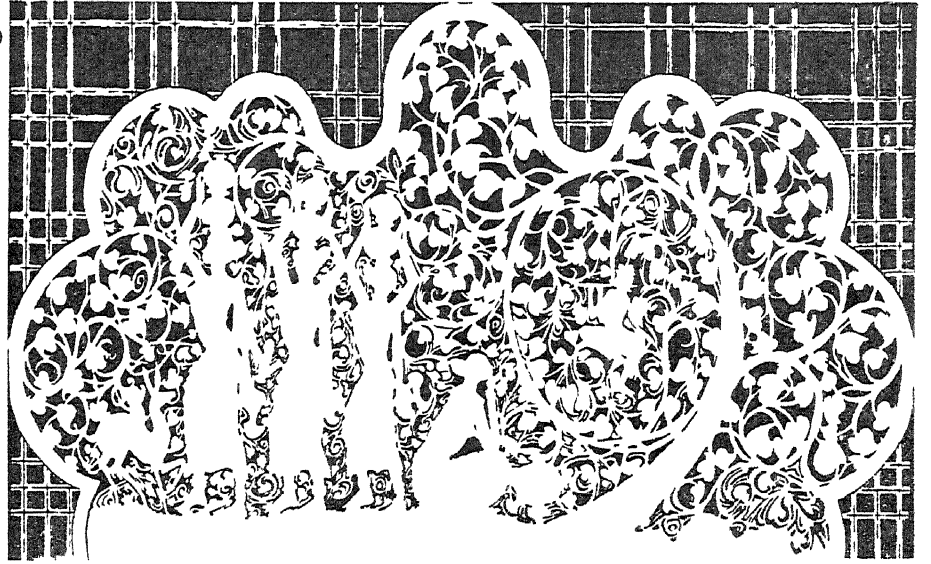
मार्च १९७९ वर्ष ९ अंक १०

एक प्रति .... रु. ०—५०
वार्षिक चंदा .... रु. ६—००

गोपियों की विरहाग्नि का चित्रण — श्री अर्जुन शरण प्रसाद ५
भक्त-वत्सलता — श्री आनन्दमोहन ९
मीरा और आण्डाल के पदों में नवधा भक्ति का स्वरूप — श्रीमती एम. नागलक्ष्मी १३
वैष्णव भक्ति का स्वरूप — श्री डा० एस वेणुगोपालाचार्य १५
भगवद्गीतासु श्रीकृष्णमतम् — श्री वी नरसिंहन् १८
अब की बेर उबारो (कविता) — श्री जगमोहन चतुर्वेदी २०
सकल देवता पूजा विधि — श्री सी रामय्या २०
सूर भक्त के परिप्रेक्ष्य में प्रेम और अहं — डी० इन्दुवशिष्ट २२
श्री श्रीनिवास कैवल्य प्राप्तिः — श्री या. रामाराव २४
जीवन्मुक्त (कविता) — श्री आर. रामकृष्णा राव २५
बिनु गुरु होइ कि ज्ञान — श्री जगमोहन चतुर्वेदी २९
रामायुध अंकित गृह — श्री शंकरलाल छगनलाल चोकसी ३४
मासिक राशिफल — डा० डी अर्कसोमयाजी ३९

गौरव संपादक
श्री पी. वी आर. के. प्रसाद
आइ. ए. एस्,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति. ति. दे. तिरुपति
दूरवाणी २३२२

संपादक, प्रकाशक
के. सुब्बाराव, एम. ए,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.
दूरवाणी २२५४.

मुद्रक
एम्. विजयकुमाररेड्डी,
मनेजर, टी. टी. डी. प्रेस्, तिरुपति.
दूरवाणी २३४०.

मुखचित्र: श्री अन्नमाचार्य के शृंगार संकीर्तन "अलरुलु कुरियग आडेनदे" का भाव चित्र—चित्रकार: बापू

यदि हम यह कहें तो अतिशयोक्ति नही होगी कि इस विशाल विश्व में भारत से बढकर पवित्र, महिमावान, आध्यात्मिक ज्ञान सपन्न देश और कोई नही है। भौगोलिक स्थिति पर विचार करने पर भी स्पष्ट होता है कि पावन गगा की जलधाराए, हिमालय की पर्वत श्रेणियाँ, त्रिवेणी सगम, मनमोहक प्राकृतिक सौन्दर्य इत्यादि यहां पर आध्यात्मिक वातावरण के उपयुक्त ही हैं। इस आध्यात्मिक वातावरण को पुष्ठ करनेवाले अनेक देवमन्दिर, पवित्र तीर्थराज, धार्मिक स्थल इस देश में विद्यमान हैं। लेकिन कम तो यही है कि भारत की जनता हमारे देश की इन सभी विभूतियों का सदुपयोग नही कर रहे हैं।

यदि प्राचीन भारत के इतिहास पर दृष्टिपात करेंगे तो विदित होता है कि वैदिक काल में हमारे पूर्वज अपनी सतान को अच्छा शिक्षण देते थे। वेद वेदांग, पुराण, तथा सकल शास्त्र रूपी ज्ञान-खनि के सार को अपनी सतान की नस नस में कूट कूट कर भरते थे और उन को महान विद्वान, ज्ञानी और विज्ञानी बना देते थे। अल्प आयु में ही महान तपस्वियों को भी अलभ्य भगवान के साक्षात्कार तथा चिर स्मरणीय अमर पद को प्राप्त करने वाले बच्चे हमें पौराणिक तथा उपनिषदों की कथाओं में मिलते हैं। ध्रुव तथा नचिकेता इस के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

लेकिन आजकल मानव अधिकत: हमारी प्राचीन संस्कृति को भूलकर आधुनिक वैज्ञानिक जीवन के पीछे पड रहा है। इस के प्रभाव से अपने जीवन को यन्त्रवत् बना-कर अपने को ही नही वरन् अपनी आगामी पीढियों को भी भारतीय प्राचीन संस्कृति, महत्व आदि विलक्षण विभूतियों के ज्ञान से वंचित कर रहा है।

आधुनिक मानव इस विषय के प्रति ध्यान नही दे रहा है कि आजकल के बच्चे कल के नागरिक है। प्राचीन सस्कृति को सीखकर, उसे आगामी पीढियों को वितरित करने वाले ये बच्चे ही हैं। एक प्रकार से भूत और भविष्य के बीच वे सेतु के समान हैं। अतएव आधुनिक भारत की जनता का कर्तव्य यही है कि वे अपनी सतान को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ वेद-वेदांग, पुराण, शास्त्र आदि धर्म ग्रन्थों को भी सिखावें ताकि हमारी प्राचीन सस्कृति युग युगों तक बनाये रखें। इस अन्तर्राष्ट्रीय बच्चों के वर्ष में बच्चों को प्रदान करनेवाली हमारी भेंट यही है।

भगवान बालाजी इस कार्य की सफलता के लिए अपनी शुभाशीस प्रदान करें।

गोपियों की विरहाग्नि का चित्रण

जीवन का सबसे व्यापक पक्ष और काव्य का शिरोमणि है श्रृंगार। रतिभाव की प्रबल-शक्ति का उल्लेक अनादिकाल से होता आ रहा है। कामदेव के पचशर से जब अचर सचर सभी प्रभावित हो जाते है तो बचारी गोपियो की क्या बिसात है?

उद्धव एव गोपियो के मिलन प्रसग में गोपिया कामदेव की महिमा का वर्णन करती है—

"सर्वांगों में लहर उठती यौवनाम्भोधि की है।
जो है घोरा परम-प्रबला और महोच्छ्वास
-शीला।
तोडे देती प्रबल-तरि जो ज्ञान और बुद्धि
की है।
घातो से है दलित जिस के धैर्य्य का शैल
होता" ॥

जिस कामदेव के आघातो से बडे बडे बुद्धि-प्रवीण लोगो के छक्के छूट जाते है उसे बेचारी गोपियाँ कैसे सहन कर सकेगी ?

साहित्यरत्न श्री अर्जुनशरण प्रसाद, एम ए.,
चक्रधरपुर

"चक्री होते चकित जिस से काँपते हैं
पिनाकी।
जो वज्री के हृदय-तल को क्षुब्ध देता
बना है।
जो है पूरा व्यथित करता विश्व के देहियों
को।
कैसे ऐसे रति-रमण के बाण से वे
बचेंगी" ॥

जो होके भी परम-मृदु है वज्र का काम
देता।
जो होके भी कुसुम, करता शैल की
सी क्रिया है।
जो होके भी मधुर बनता है महा-दग्ध-कारी।
कैसे ऐसे मदन-शर से रक्षिता वे रहेंगी॥

कामदेव की महिमा का वर्णन करते हुए गोपियाँ आगे कहती है—

"प्रत्यंगों में प्रचुर जिसकी व्याप जाती कला
है।
जो हो जाता अति विषम है काल-कूटादिकों
सा।
मद्यों से भी अधिक जिसमें शक्ति उन्मादिनी
है।
कैसे ऐसे मदन-मद से वे न उन्मत होंगी"॥
चतुर्दश सर्ग—

ज्ञानयोग से भक्तियोग कहीं श्रेयस्कर है। भक्तिद्वारा प्रेमी अपने भगवत प्रियतम को आसानी से पा लेता है। उद्धव गोपियो को योग की शिक्षा देते है। किन्तु, कृष्ण के प्रेम में उन्मत्त गोपियाँ योग क्या जानें—

"भोली-भाली व्रज-अवनि क्या योग की रीति
जाने।
कैसे बूझे अ-बुध अबला ज्ञान-विज्ञान बातें।
देते क्यों हो कथन करके बात ऐसी
व्यथायें।
देखूँ प्यारा वदन जिनसे यत्न ऐसे बता दो"॥

गोपियाँ तो श्रीकृष्ण को नजर-भर देखना चाहती है। सूरदास की गोपियाँ भी कहती है—

अंखिया हरिदर्शन की प्यासी।'

प्रेमी के दर्शन की लालसा स्वाभाविक है। इसी भाव को एक शायर ने कितने सुन्दर शब्दों में व्यक्त किया है—

"तमन्ना थी तो गर कुछ थी अगर कुछ
आखरी अपनी,
कि तुम साहिल पै होते और किश्ति डूबती
अपनी,
घड़ी भर केलिए जालिम अगर तू दमभर
आ जा।
बुझानी है तेरे दामन से समये जिन्दगी
अपनी॥"

कितना सुन्दर भाव है? प्रेमी को अन्त समय में देखते हुए अपनी जिन्दगी की चिराग को बुझा देना। लौकिक होकर भी यह अलौकिक-सा लगता है।

गोपियो के यह पूछने पर कि श्रीकृष्ण का पदार्पण अब ब्रज मे फिर होगा या नहीं, उद्धव इस प्रश्न को काल की गति पर टाल देते है। सचमुच में 'महाकाल के नर्तन में सृष्टि और सहार तो निहित है ही, साथ ही इसमें क्षणभगुर ही सही जीने के उल्लास का उद्घोष भी है।

उद्धव गोपियो को धैर्य बँधाते हुए कहते है—

"हा। भावी है परम-प्रबला दैव-इच्छा
बली है।
होते होते जगत कितने काम ही हैं न होते।
जो ऐसा ही कु-दिन ब्रज की मेदिनी-मध्य
आये
तो थोड़ा भी हृदय-बल को गोपियों! खो न।
देना॥"

भक्ति की उच्चभावना की वही उच्च अवस्था है जिसमे भक्त अपने भगवंत को कभी नहीं भूलता भले ही वह सारे ससार को ही भूल जाये। गोपियाँ इसी भावना को व्यक्त करती है—

"भोगों को औ भुवि-विभव को लोक की
लालसा को।
माता-भ्राता स्वप्रिय-जन को बन्धुको बांधवों
को।
वे भूलेंगी स्व-तन-मन को स्वर्ग की
सम्पदा को।
हा! भूलेंगी जलद-तन की श्यामली मूर्ति
कैसे॥"
चतुर्दशसर्ग—

अन्त में प्रेम की चरम परिणति विश्व-प्रेम में होती है। गोपियों का प्रेम भी अन्त मे इश्कमजाजी से इश्कहकीकी हो जाता है।

कबीरदास ने इसी भगवान को व्यक्त करते हुए कहा है कि—

"लाली मेरे लाल की जित देखो तित लाल
लाली देखन मैं गयी मैं भी हो गई लाल।"★

गोहत्या सद्भाव से बन्द हो

यह एक वैसी विडम्बना है कि हम आज अपनी सभी समस्याओं के समाधान केलिये सरकार पर दबाव डालते हैं कि वह कानून बनाकर आनन-फानन में उनका समाधान कर डाले। पर क्यों नही हम अपने दिल के दर्पण में झाँककर देखते हैं कि सरकार की भी कुछ हद तक अपनी सीमाए हैं जिनके बाहर पहुँचने में वे विवश हैं। साथ ही हम यह क्यों नही सोचते कि कानून सभी कर्ज की दवा भी तो नहीं है।

आज देश के कोने-कोने से गोहत्या बन्द करने केलिये केन्द्रीय एव प्रान्तीय सरकारों से कानून बनाने के लिये मांगे की जा रही है, आन्दोलन किये जा रहे हैं और लोगों द्वारा अनशन किये जा रहे हैं। यहाँ तक कि आधुनिक भारत के महामनीषी सत प्रवर आचार्य विनोबा भावे ने भी अनशन करने की धमकी दे रखी है।

लेकिन इन सब बातों के बावजूद यदि हम मुसलमान, क्रिश्चियन, यहूदी आदि भाइयों से सहयोग प्राप्त करने की कोशिश करें तो कितना ही अच्छा हो।

भारत माता के शुभ भाल पर गोहत्या के कलंक का टीका लगा हुआ है जिसे धोना हम सभी भारतवासियों के हित में हैं। गोहत्या बंद करने की माग के समर्थन में हिन्दू भाई बहुत सारे तर्क करते हैं। पर उन तर्कों पर जब गौर से विचार किया जाता है तब लगता है कि उनके सारे तर्कों के पीछे उनकी वह धार्मिक भावना ही अधिक सक्रिय रूप से काम कर रही होती है जिसके अनुसार वे गाय को अपनी माता के समान मानते हैं। यह सच है कि सभी हिन्दूओं के लिये गाय माता के समान है। अतः जब गायें काटी जाती हैं और उनके मास खुले बाजार में बेचे जाते हे तब उनकी भावनाओं को गहरी ठेस पहुँचती है। उनके मन में तीव्र आक्रोश उत्पन्न होता है—सर्व प्रथम तो उन लोगों के

श्री रमाकान्त पाण्डेय

कलकत्ता—४३,

प्रति जो गायों को काटते हैं और उनके मांस को खुले बाजार में बेचते हैं। फिर आक्रोश होता है। उन लोगों के प्रति जो गोमांस खाते हैं और अन्त में उस सरकारी व्यवस्था के प्रति जो अपते क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत गायों को काटने और उनके मांस को बेचने तथा खरीदने की अनुमति देती है। अब यहाँ यह विचारणीय है कि क्या गोहत्या सिर्फ कानून बनाने से बन्द हो जायेगी जब भारत दस-बारह करोड लोग गायों को मारने और उनके मांस को खाने के लिये कटिबद्ध रहें। इस प्रश्न का उत्तर नकारात्म ही होगा।

हाँ यह सही है कि राजमय अपराध कर्म केलिये निरोधात्मक व्यवस्था का काम अवश्य करता है लेकिन उन्मूलनात्मक वृत्ति का नही। यह काम तो मनुष्यों के दिल में सद्विवेक को जगाकर और अपराध कर्म के प्रति घोर घृणा का भाव उत्पन्न करके ही किया जा सकता है।

इसी भाव से अनुप्राणित्त हो हम मुसलमान, क्रिश्चियन आदि भाइयों से अनुरोध करते हैं कि जब हमें इसी वतन में रहना है तो हम आपस में एक दूसरे के प्रति घृणा शेष की

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

श्री पद्मावती देवी के प्लवोत्सव के अवसर पर उभय देवेरियो सहित श्री सुन्दरराज स्वामी

तिरुमल-तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

कोइल आल्वार तिरुमंजनम्
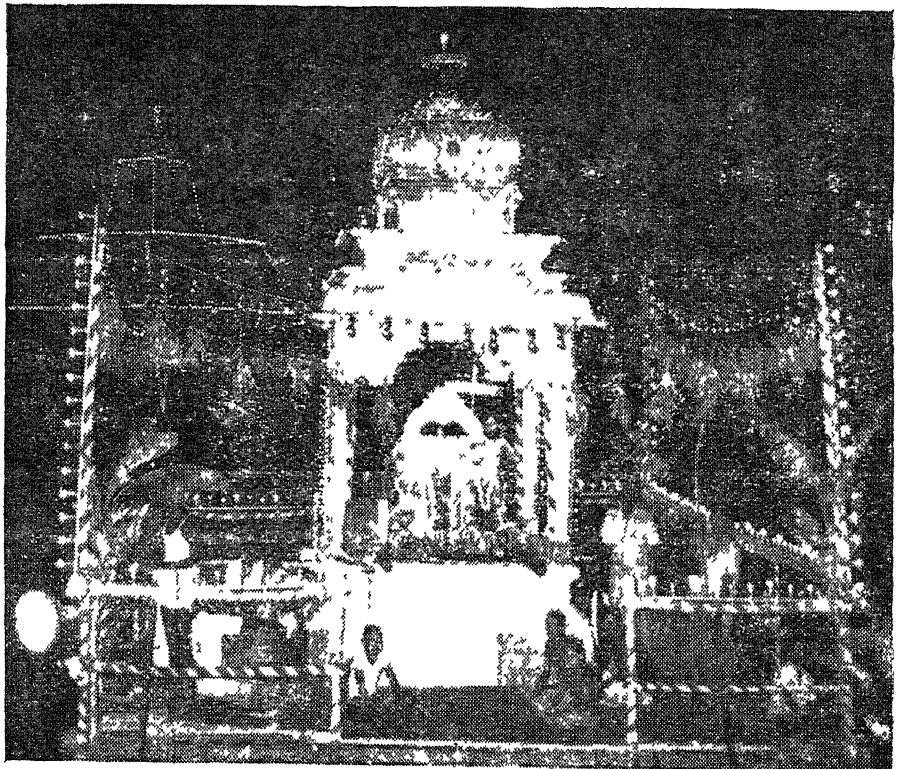
आगम शास्त्रों ने देवालयों में पवित्रता की आवश्यकता तथा वैशिष्ट्य का विशेष उल्लेख किया है। मंदिर के अन्दर प्रवेश करने के पहले स्नान करना, पादरक्षाओं को छोड़ना इत्यादि कुछ नियम इसी पवित्रता को बनाये रखने केलिए ही निर्णीत किये गये है। मंदिर के अहाते में ही नहीं बल्कि गर्भगृह में भी आगम शास्त्र के अनुसार एक पवित्र तथा आरोग्यदायक कार्यक्रम संपन्न होता है जो कोइल आल्वार तिरुमंजनम् के नाम से अभिहित है।

इस सेवा विधान में सभी मूर्तियाँ तथा अन्य वस्तुएँ दीपों सहित गर्भगृह से बाहर लायी जाती हैं। और मूलमूर्ति को पानी अंदर नहीं आनेवाले आच्छादन (water proof covering) से अच्छादित किया जाता है। उस के बाद पूरा गर्भ-गृह, दीवार, जमीन तथा ऊपरी भाग अधिक गरम पानी से खूब साफ किया जाता है। तदनंतर सर्वत्र कुंकुम, कर्पूर, चंदन, हल्दी इत्यादि से लेप किया जाता है। फिर मूलमूर्ति से अच्छादन हटाकर मूर्तियाँ, दीप और अन्य चीजों को गर्भ-गृह के अन्दर रखाया जाता है। मूलमूर्ति को पवित्र पूजाएँ समर्पित की जाती है और भोग लगाया जाता है।

यह पवित्र कार्यक्रम वर्ष में केवल चार बार मनाया जाता है- (१) युगादि के पूर्व (तेलुगु नूतन वर्ष), (२) मिथुन कटक संक्रमण के दिन (आणिवारि आस्थानम्) के पूर्व, (३) दिवाली के पूर्व (४) वार्षिक ब्रह्मोत्सव के पूर्व।

इस सेवा को मनाने केलिए सेवा की दर रु १,७४५/- है। १० लोगों को प्रवेश मिलेगा। कार्यक्रम के अंत में गृहस्थ को वड़ा, पापड़, दोसे इत्यादि प्रसाद भी प्राप्त होंगे। यह सेवा दैनिक पूजा कार्यक्रम के बाद प्रातः ८ बजे संपन्न होती है। उस दिन भगवान का दर्शन दोपहर ३ बजे से चालू होगा।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति ति देवस्थान, तिरुपति

भक्त तुकाराम →

भक्त-वत्सलता

नास्ति तेषु जाति विद्यारूपकुल धन क्रियादि भेद:

अर्थात भक्ति में जाति, विद्या, रूप, कुल धन और क्रियादि का भेद नही है।

भक्त को भगवान की भक्त वत्सलता का बडा सहारा है। उनकी दया और कृपा के भरोसे भक्तजन ससार की विघ्नवाधाओं को पार करता हुआ भगवद् भक्ति का आनन्द प्राप्त करता है। भगवान की भक्त-वत्सलता के संबन्ध में नामदेव सूरदास आदि भक्तो ने जो हृदयोद्गार निकाले है उनका रस चखिए :—

नामदेव :—

दूरोनि ओळगील्या अविनाश देता हे।
तो जवळी जाता काय देईल नेणो॥

भगवान दान शिरोमणि है। दूर से ही जो उनको बुलाते है उन्हे वे अमर बना देते है; फिर जो उनके समीप पहुँच जाता है उसके लाभ का क्या ठिकाना! लक्ष्मीकात भगवान ऐसे कृपालु है कि उन्हे छोडने में कष्ट होता है। अतः वैकुठनायक मुक्ति भुक्तिदायक पांडुरंग स्वामी की सेवा करो। अब नामदेव भगवान की भक्त वत्सलता और उदारता के उदाहरण देते है :—

रावण ने जिस लकापुरी को प्राप्त करने के लिए शिवजी को अपने दस सिर काट कर अर्पण करने का महान् कष्ट भोगा उसी पुरी को भगवान ने एक नमस्कार के बदले विभीषण को प्रदान किया।

ध्रुव की सापत्न माता ने यह कह कर उसे अपने पिता की गोद में न बैठने दिया कि "तू राज-पुत्र नहीं है"। यह सुनकर वन मे जाकर ध्रुव ने घोर तपस्या की और सकल देवो में श्रेष्ठ पदवी प्राप्त की। दुर्योधन ने नाना प्रकार के उत्तम पक्वान्न भगवान के भोजन केलिए तैयार करवाए, परन्तु श्रीकृष्ण ने उनके घर जाकर एक ग्रास भी नहीं लिया। भगवान बिना बुलाए विदुर के यहाँ गए और उनके यहाँ साग-पात का भोजन किया। भक्त अर्जुन के लिए कृष्ण ने अपनी प्रतिज्ञा भगकर भीष्म की प्रतिज्ञा को मान दिया। दीक्षित जन भगवान को अपने हाथ से दान देने को उद्यत रहते है, परन्तु उस ओखेमुँह उठाकर नहीं देखते। वे ही कृष्ण सुदामा के तंदुल (पोहे) को देखकर ललचाते है और अपना हाथ पसारते है। नामदेव कहते है कि ऐसे उदार और भक्त-वत्सल भगवान की कीर्ति गाओ, उन्ही का ध्यान करो तथा उन्हें ही अपने हृदय कमल मे धारण करो। नामदेव को हरि-गुण अत्यन्त प्रिय है और वह तो भाट बन कर भगवान का यश गाना चाहता है।

श्री आनन्द मोहन, एम. ए.
हैदराबाद

दूसरे अभंग मे नामदेव कहते है :
"अपराधाविणवली घातला पाताली॥"

भगवान! आपकी लीला विचित्र है। आपने बिना ही अपराध के राजा बलि को पाताल में भेज दिया। आपको उस पर दया आई इसलिए आप उसके द्वारपाल बन गए। हे सुजान केशव! मै किससे शिकायत करूँ क्योकि आपके अतिरिक्त हमारे लिए और दूसरा नहीं। आप भक्तो से इतने अकित है कि उनका कष्ट नही देख सकते। आपने बाल-मित्र सुदामा के साथ भोजन किया

जो गाव - गाव भीख माग कर अपना पेट पालता था । उसकी विपत्तियो को दूर करने के लिए उसे राजकीय संपदाएं दी । आपने अपने इस कृत्य मे राजा - रक मे कोई विभेद नही किया । मुख से आपका नाम न लेने के कारण वसुदेव और देवकी को कारागृह का वास भोगना पडा और कस ने उन्हें अनेक कष्ट दिए । इन्द्र ने जब क्रोधकर व्रज पर मूसलाधार वर्षा की तो आपने गोवर्धन पर्वत उठाकर सबकी रक्षा की । अपने एक पद मे सूरदास ने इसका मनोरम चित्रण किया है :—

आज जो हरिहि न शस्त्र गहाऊँ ।
तो लाजो गंगा जननी को शान्तनु सुत न
कहाऊँ ॥

और इन्द्र के गर्व को चूर्ण किया । जब पांडवो ने विपत्ति के समय हरि का चितन किया तो आपको उनपर दया आई तथा आप उनकी रक्षा के लिए दौडकर पहुँच गए । जब दुष्टो की सभा में दु.सासन ने द्रौपदी को नग्न करने का प्रयत्न किया तो आपने द्रौपदी का चीर बढाया । जब

श्री गोविंदराजस्वामीजी का मन्दिर, तिरुपति.

दैनिक — कार्यक्रम

	समय		कार्यक्रम
सबेरे :	5–00 से 5–30 तक	... .	सुप्रभातम्
	5–30 से 8–30 तक	... ...	विश्वरूप सर्वदर्शन
	8–30 से 9–00 तक	...	शुद्धि
	9–00 से 9–30 तक	. ...	तोमाल सेवा
	9–30 से 10–00 तक	.. .. . .	अर्चना
	10–00 से 10–30 तक	. ...	घटी तथा सातुमुरै
	10–30 से 12–30 तक	.. ... .	सर्वदर्शनम्
	12-30 से 1–00 तक	. . .. .	दूसरी घटी
शाम को	1–00 से 6–00 तक	... ..	सर्वदर्शनम्
	6–00 से 7–00 तक	... .	रात के कैंकय
	7–00 से 8–45 तक	... .	सर्वदर्शनम्
	9–00 बजे	... .	एकातसेवा

तोमाल सेवा, एकात सेवा : 13/- रुपये का एक टिकेट (चार आदमी जा सकते है)

अर्चना 7/- रुपये का एक टिकेट (तीन आदमी जा सकते है)

सूचना त्योहार के दिनो मे तथा विशेष दिनो मे, अर्थात्, उत्तरा, एकादशी, शुक्रवार तथा रविवार एव उत्सव के दिनो में समयो की सूचना मदिर के सूचना-बोर्ड पर दी जायगी तथा यात्रियो को भी लाउड–स्पीकरो के द्वारा घोषणा कर सूचना दी जायगी ।

हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को आपका नाम लेने के कारण कष्ट दिया तो आपने उस दैत्य का नाश कर दिया । जब रावण ने विभीषण को लात मारी तो श्रीराम ने विभीषण को अपनी शरण मे ले रावण को मार कर उसे लंका का राज्य दिया । जब ग्राह ने गजेन्द्र को पकड लिया तो आपने वैकुंठ से दौडकर उसकी रक्षा की ।

नामदेव कहते है—हे अनाथो के नाथ ! अब इस दीन की प्रार्थना स्वीकार कर उसका उद्धार करे इसके उपरान्त आपकी जो इच्छा हो सो करें ।

नामदेव ने "भक्तासाठी देव अवतार धरीं" "पाडव भाग्याची वर्णावया थोरी" "पाला खाऊनिया धाला वहिणी धरी" "देवा तू जया होसी प्रसन्न" आदि अभगो मे उपर्युक्त भावों को ही व्यक्त किया है ।

सूरदास :—

"राम भक्त-वत्सल निज बाना"

भक्त - वत्सल होना राम का निजीबाना है । वे भक्त की जाति, गोत्र, कुल नाम को नहीं गिनते । वे यह भी नहीं देखते कि उनका भक्त भिखारी है या राजा । इसके समर्थन में सूरदास प्रश्न करते है "क्या शिव, ब्रह्मादि की कोई जाति है ? " प्रभु को अहमत्व से द्वेष है अतः वे अहकारी से दूर रहते है । यद्यपि प्रह्लाद ने दानवकुल में जन्म लिया था तथापि भक्त था । इसी कारण भगवान उसकी रक्षा केलिए स्वय खभ फाडकर प्रकट हुए । श्रीराम और कृष्ण ने सदा अपने भक्तो के संकट निवारण किए ।

भक्त की महिमा अवर्णनीय है । ध्रुव क्षत्री थे और विदुर दासी पुत्र । अन्य अनेक भक्त भी कुछ उत्तम जाति, गोत्र और कुल के न थे । युग - युग से यह विरद चली आई है कि भगवान भक्तो के हाथ बिक गए है । कृष्ण ने राजसूय यज्ञ में अपने हाथो में जल लेकर सब के चरण धोए ।

सूरदास कहते है - मै अपनी एक जिह्वा से श्याम के अगणित गुणों का वर्णन कहाँ तक करूँ। वेद और पुराण प्रभु की अनन्त महिमा के साक्षी है । तात्पर्य यह है कि जब शेष और शारदा जिन के गुण - गान में अपने को असमर्थ पाते है, तथा जिनके संबध में वेद नेति - नेति कहते है उनके

यशोगान करने मे सूरदास कैसे समर्थ हो सकता है।"

कबीर सार रूप में कहते हैं :

एक बिन्दु से विश्व रचो है को ब्राह्मन को सूद्रा "

अर्थात

जाति पांत पूछै नहि कोइ
हरि को भजै सो हरि का होइ।

दूसरे पद में सूरदास कहते है :

"गोविंद प्रीति सबनि की मानत"

गोविद सब की प्रीति मानते है। जो जिस भाव से उनकी सेवा करता है उसके हृदय की बात वे जान लेते है। शबरी ने चख-चख कर खट्टे बेरो को अलग कर मीठे बेरो से अपनी गोद भर ली और बडे प्रेम से मीठे जूठे बेरो को भगवान को खिलाया। भगवान ने जूठिन खाने से कोई सकोच नहीं किया वरन् प्रेम से बेर खा लिए। भगवान सदा भक्तो के हितकारी है। प्रेम-विह्वल होकर बडे आनन्द से उन्होने विदुर के घर केले के छिलके खाए। भक्त और भगवान दोनो ही प्रेम मे इतने मग्न थे कि उनको यह न मालूम हुआ कि भक्त भगवान को छिलका अर्पण कर रहा है।

प्रभु करुणा निधान है उन्होने सब ही युगो में भक्त का मान बढाया है।

सूरदास ने ' जन की और कौन पति राखे " "कहावत ऐसे त्यागी दानि" आदि पदो में भी ऐसे ही भाव प्रकट किए है।

" उच निंच नांहीं नेणे भगवंत "

तुकाराम :—

भगवान ऊँच-नीच का विचार नही करते। उन्हे तो भक्त का भाव ही प्रिय है। भगवान ने दासीपुत्र विदुर के वहाँ भोजन किया, दैत्य घर मे प्रह्लाद की रक्षा की, रोहिदास चमार के साथ पशुओं का चमडा रंगा, कबीर के पीछे कपडे बुने, सजन कसाई के यहाँ मास बेचने लगे, सावत्या माली के लिए घास-पात जोहने लगे। नरहरी सुनार की छरिया फूंकने लगे और चोखा मेल्या के साथ पशुओ को चराने लगे। भगवान ने नामदेव के साथ बिना सकोच भोजन किया, ज्ञानदेव की भीत को आगे बढाया, जनी के साथ उपलिया बेची धर्म के घर पर वृक्षो को पानी दिया, सारथी बनकर अर्जुन का रथ हाँका, सुदामा के पोहे बडे प्रेम से खाए ग्वालो के यहाँ गायो को चराया। वे राजा बलि के द्वारपाल बने, उन्होने ये कोवा का ऋण चुकाया अबरीष की गर्भ में रक्षा की, मीरा बाई के लिए विष का प्याला पिया, वे दामाजी के साझेदार बने। उन्होने गोरा कुम्भार के लिए मिट्टी गूँथी, नरसी मेहता की हुडी सकराई। वे पुंडलिक के लिए अब तक खडे है। धन्य है ऐसे भगवान को!

तुलसीदास के शब्दो में

कह रघुपति सुनु भामिनिवाता।
मानउँ एक भगति कर नाता॥
जाति पाँति कुलधर्म बडाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल वारिद देखिय जैसा॥

रामदास :—

"बहु शापितां कष्टला अंबऋषी"

जब दुर्वासा ने अंबरीष को शाप दिया तो श्रीहरि ने चक्र सुदर्शन भेजकर उसकी रक्षा की, उपमन्यु को क्षीर समुद्र दिया। बालक ध्रुव को अटल पदवी दी। गजेन्द्र को ग्राह मे छुडाने के लिए दौडे आए, पापी अजामिल को अन्त समय अपने पुत्र 'नारायण' को पुकारने के फल में मुक्ति प्रदान की। जब शखासुर वेदो को चुरा ले गया तो भगवान ने मत्स्य रूप धारण कर वेदो की रक्षा की। कूर्मरूप धारण कर भगवान ने अपनी पीठ पर पृथ्वी को धारण किया। भक्त की रक्षा केलिए नीच योनि तक धारण की। जब हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को बहुत कष्ट दिया तो भगवान ने नृसिंह रूप धारण कर प्रह्लाद की रक्षा की। चक्रपाणि ने इन्द्र की रक्षा के लिए वामन रूप धारण किया, क्षत्रियो से ब्राह्मणो की रक्षा केलिए परशुराम का रूप धारण किया। अरण्य में जाते हुए अहिल्या का उद्धार किया, देवताओ को बन्धन मुक्त किया। द्रोपदी की रक्षा केलिए शीघ्र दौड़े आए। भगवान ने कलि में बौद्धावतार धारण किया। दीन और अनाथो की रक्षा केलिए भगवान कलकी अवतार धारण करेंगे। भगवान अपने भक्त की कभी उपेक्षा नहीं करते। वे भक्त-वत्सल है। तुलसीदास के शब्दो में

जब-जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हि असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहिं वरनी।
सीदहिं विप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि विविध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

राजमन्नारमन्दिर के श्री राजगोपाल स्वामीजी का रथोत्सव
फोटो श्री वी एस श्रीनिवासन्, तजावूर

तिरुमल-यात्रियों को सूचनाएँ (केशसमर्पण)

केश समर्पण करने का रहस्य मानव के सपूर्ण अहभाव को छोडकर उस मूल विराट की शरण में विनीत भावना से अपने को समर्पित करना ही है । हमारे यहाँ केश समर्पण इसलिए एक प्रचलित प्रथा है ।

लेकिन पारपरिक एव साम्प्रदायिक पद्धति में भगवान को केश समर्पण करने से ही मनौती पूरी होगी । यात्रियों की इस प्रमुख मनौती को पूर्ण करने केलिए देवस्थान ने अनेक कल्याण कट्टाओं का प्रबध किया है । यह विषय विशेष रूप से कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनधिकारी नाइयों से अन्य जगह सिरमुण्डन कराने से पवित्रता नहीं रहेगी और भक्त की मनौती भी पूरी नहीं होगी । देवस्थान के नियमित नाइयों से सिर मुण्डन करवाने से ही वे केश भगवान को समर्पित किये जायगे ।

इसलिए यात्रियों से निवेदन है कि वे केवल देवस्थान के कल्याण कट्टाओ में ही अपने केश समर्पण करे जहाँ पर अनेक अनुभवी नाई रहते हैं और जिस के नजदीक ही नहाने केलिए नियत शुल्क चुकाने पर गरम पानी देने की व्यवस्था भी है । जो यात्री केश समर्पण कार्टेज में ही करवाना चाहते हैं, वे देवस्थान के द्वारा इस का प्रबध कर सकते हैं ।

केश समर्पण केलिए उचित दर पर कल्याणकट्टाएँ तथा कार्टेजो के पास टिकट बेचे जाते हैं । नाइयों को अलग रूप से पैसे देने की आवश्यकता नहीं है ।

कुछ धोखेबाज व्यक्ति सिर मुण्डन का कम शुल्क लेकर, भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने के वायदे करके यात्रियों को अनधिकारी नाइयो के पास ले जा रहे है ।

यात्रियो से निवेदन है कि देवस्थान के कल्याणकट्टाओ को छोडकर अन्य जगह सिर मुण्डन न करवावें । ऐसा करवाने से वे केश भगवान को समर्पित नही समझे जायेंगे और यात्रियों की मनौतियाँ भी पूरी नही होंगी । बालाजी के शीघ्र दर्शन की सुविधा के लिए ति ति देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबध किये गये है, कोई भी व्यक्ति भगवान का दर्शन से शीघ्रतर करवाने में असमर्थ है ।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति देवस्थान, तिरुपति.

मीरा और आण्डाल के पदों में नवधा - भक्ति का स्वरूप

(गतांङ्क से)

पादसेवन तो इनकी भक्ति - भावना का प्रधान अग रहा।

प्रभु गिरिधर नागर —
चरण कमल बलिहारी।"
"हरिचरणां चित्त धार्‌यो"
"चरण-रज-महिमा मै जानी।"
"मन ते परसि हरि के चरण।,
सुभग कोमल, कँवल कोमल,
जगत-ज्वाला हरण ॥

—आदि पदो से मीरा की कृष्ण चरणो में कितनी दृढ भक्ति थी, वह अच्छी प्रकार प्रकट है।

आण्डाल ने भी तिरुप्पावै के चौबीसवे पद मे श्री चरणो की यो बन्दना की है:

"उस दिन तुम ने जिन चरणो से इन लोको को नापा था, उन श्री चरणो की जय-जय हो। दक्षिण दिशा में स्थित लकापुरी का नाश करके तुम ने जो पराक्रम दिखाया था, उसकी जय हो गोवर्धन पर्वत को छत्र के बराबर उठाकर इन्द्र के गर्व का भग करनेवाले गिरिधरलाल की महिमा की जय हो।"

उपर्युक्त पद में आण्डाल ने श्रीकृष्ण के चरण-कमलो की वन्दना करने के साथ-साथ भगवान के सौलभ्य गुणो की महिमा का गान भी किया है। ऐसे एक नहीं, अनेक पद है।

मीरा ने भी भगवान कृष्ण के गुणो का गान करती हुई अनेक पद गाये है।

उदाहरणार्थ एक पद नीचे दिया जाता है —

हरि थे हरया जन री भीर।
दौपदी की लाज राख्यों, थे बढाया चीर।
भगत कारण रूप नरहरि धरयाँ आप सरीर।
बूडताँ गजराज राख्याँ कहां कुंजर कुंजर भीर।
दास मीरा लाल गिरिधर, हरो म्हारी
पीर।

इस प्रकार मीरा की वन्दना भक्ति से युक्त अनेक पद पाये जाते है। "तुम विन मेरी कौन खवर ले गोवर्धन गिरिधारी" "हरि बिन कूँण गति मेरी" —आदि पदो में मीरा की नम्रता से युक्त वन्दना भक्ति-भाव दर्शित होता है।

दास्य - भाव भी इन कवयित्रियो की भक्ति - भावना का विशेष अश है। दोनो ने अपने प्रियतम के सामने अपनी अबोधता बडे विनीत भाव से प्रकट की है। आण्डाल तिरुप्पावै के २८ वें पद में यो कहती है — "हम अज्ञानी है; नीच ग्वाल जाति की है, परन्तु हे कृष्ण! हमारे कुल मे तुम्हारा जन्म हो जाने से, हम तुम्हारा सपर्क
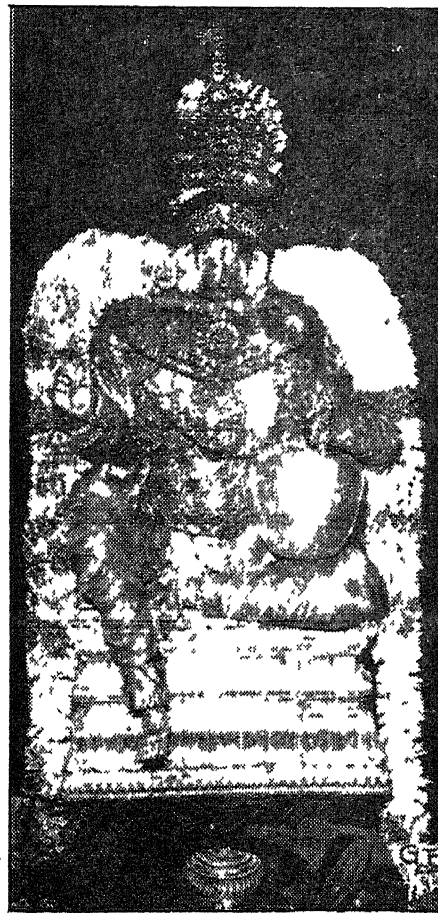
पाकर पापमुक्त हो चुकी है। तथा हमारा जन्म सफल हो चुका है।"

यही भाव मीरा के शब्दो मे यो अभिव्यक्त हुआ है—

तुम गुणवन्त, बडे गुणसागर, मै हूँ जो
औगुणहारा।
मै निरगुणी गुण एकौ नाही, तुम हो
वगरुणहारा ॥"

"मोरे प्यारे गिरिधरीजी,
दासी क्यों बिसार डारी।
द्रौपदी की लाज राखी, सब
दुख सो निवारी।

... ...

भीलनी के जूठे बेर खाए,
कुछ जात न बिचारी।

... ...

प्यासी फिरौं दरस बिन तलफौं
मोहे काहे बिसारी।
'मीरा' को दरसन दीजै गिरिधर
अपनी ओर निहारी ॥"

मीरा की भक्ति - भावना में दास्य - भाव के साथ - साथ श्रद्धाभाव भी सहज ही समन्वित हो गया है। परन्तु आण्डाल की प्रेम भक्ति मे संख्य भावना एवं अनुरंजकता अधिक आ गयी है।

उपासना - पद्धति की चरमावस्था में आत्म-निवेदन या आत्मसमर्पण का भाव आ जाता है। आण्डाल तथा मीरा के अधिकाश ऐसे ही पद है—

तिरुप्पावै के २६ वे पद में आण्डाल ने यो आत्मनिवेदन किया है—

"हे भगवान रगनाथ! हम सभी जन्मो में तुम्हारे साथ सबध रखना चाहती है। और सदा तुम्हारी सेवा करती रहेंगी। अब तुम हमारी सब कामनाओ की पूर्ति करो।"

मीरा ने भी अपनी पदावली में आत्मसमर्पण की अभिव्यक्ति यो की है—

मीरा हरि रे हाथ विकाणी, जणम
जणम री दासी।
मै दासी थारी जनम जनम की, थे
साहिन सुहाणां"

श्रीमती एस नागलक्ष्मी एम. ए,
कोइम्बत्तूर.

"मीरा दासी चरनन की, हम तेरे, तुम मेरे।"

"हरि म्हारी सुणाजो, अरज म्हाराज।

... ...

गवरी होई के कणी रे जाऊँ, हे हरि हिवडारा साज।

... .

मीरा के प्रभु और न कोई, तुम मेरे सिरताज॥"

"अब तो मेरे राम नाम, दूसरा न कोई।
माता छोडी, पिता छोडे, छोड्या सगा भाई।
साधु सग बैठ-बैठ लोक लाज खोई।
सत देख दौड आयी, जगत देख रोई॥

... .

दासी मीरा लाल गिरिधर होनी हो सो होई॥

रागानुगा भक्ति का अन्तिम स्वरूप - विरहानुभूति है। मीरा और आण्डाल के पदो में यही अनुभूति सर्वाधिक पायी जाती है। दोनो विरह को अपनी प्रेम भक्ति का साधन मानती है—साध्य नहीं।

आण्डाल के "नाच्चियार तिरुमोलि" के समस्त पद विरहानुभूति से युक्त है। वह कामदेव से प्रार्थना करती है कि कृष्ण से उसका मिलन करावें। वह कोयल से कहती है - कि मेरी ओर से कृष्ण को बुलाकर लाओ। यही नही, फूलो से, मयूर से प्रकृति के सभी पक्षी और ऋतुओ से, वर्षा से तथा नीले समुद्र से, कृष्ण - साक्षात्कार की अपनी कामना प्रकट करती है। आण्डाल की विरह - वेदना की चरम - सीमा वहाँ दिखायी देती है, जब उसे भगवान के पाचजन्य से ईर्ष्या होती है, क्योकि वह कभी उन से पृथक होता नहीं।

मीरा के सभी पदो में विरहानुभूति की अभिव्यक्ति है। उसने अपने को योगिनी और कृष्ण को योगी मानकर अनेक पदो की रचना की है। सभी में विरह की तीव्रता है—

जोगिया, तू कब रे मिलोगे आई।
तेरे ही कारण जोग लियौ है,
घर घर अलख जगाई।
दिवस न भूख, रैण नही निद्रा,
तुझ बिन कछु न सुहाई

मीरा के प्रभु गिरिधर नगर, मिलकर
तपन बुझाई।

एक दूसरे पद मे विरह की असहनीय व्यथा यो प्रकट करती हुई मीरा कहती है—

दरस बिनु दूखण लागै नैन।
जबके तुम बिछुरे प्रभुजी, कबहुँ न
पायो चैन।
बिरह बिथा काँसू कहूँ सजनी वह राई
करवत ऐन।

मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटण,
सुख दैण।

दोनो भक्त कवयित्रियो ने अपनी इसी रागानुगा भक्ति या माधुर्य - रस - पूर्ण भक्ति द्वारा अत्यन्त सरल और सरस ढंग से वेदान्त तत्वों की भी व्याख्या की है। यही कारण है कि इनका रहस्यवाद विशिष्ट रहस्यवाद बन गया। यह रहस्यवाद शुष्क और नीरस नही था, परन्तु अत्यन्त सरस तथा स्निग्ध था।

उदाहरणार्थ 'तिरुप्पावै' के आठवे पद मे बडे सरल शब्दो मे आण्डाल एक गभीर सत्य का प्रतिपादन करती है कि जब मनुष्य के हृदयाकाश में सत्वगुण रूपी सूर्य का उदय होता है, तब वहाँ से अज्ञान रूपी अधकार झट दूर हो जाता है। ऐसे व्यक्ति के यहां भगवान स्वयं दौडकर आते है और निवास करते है।

मीरा ने भी ऐसे ही सरल शब्दो से महान तत्वो की अभिव्यक्ति की है। उदाहरणार्थ सुनियेः

या विधि भक्ति कैसे होय?
मन की मैल हिये से न छूटी
दियौ तिलक सिर धोय।
काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहि
चंडाल।
कसाई रहत घट में, कैसे मिले गोपाल॥

सभी रहस्यवादी कवियो के भक्ति - मार्ग में भगवान से भी श्रेष्ठ और प्रथम स्थान गुरु को ही मिला है। मीरा और आण्डाल की भक्ति साधना भी इसका अपवाद नहीं है।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

श्री काचिकामकोटि पीठाधिपति श्री जयेन्द्र सरस्वती महोदय के साथ ति ति दे न्यास मण्डल के अध्यक्ष डा० रमेशन् और पत्नी समेत कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर के. प्रसाद

वैष्णव भक्ति का प्रसार

हिन्दी साहित्य के भक्तियुग में राम और कृष्ण से सम्बन्धित साहित्य की अत्यधिक महत्ता थी। रामानन्द सप्रदाय में दीक्षित साधु-सन्तो से रचित ग्रन्थों से रामभक्ति धारा की श्रीवृद्धि हुई। तुलसीदास, केशवदास, कबीरदास, रैदास आदि रामभक्त थे। इस कारण उनकी रचनाओ मे रामभक्ति की महिमा का विशद वर्णन है। कृष्ण भक्ति धारा के ग्रन्थ भी विपुल मात्रा में हैं। वल्लभाचार्य, निंबार्क चैतन्य, तीनो आचार्य कृष्ण भक्त थे। उनके शिष्यों तथा शिष्य परपरा से रचित साहित्य में कृष्णभक्ति का प्रमुख स्थान था। वल्लभाचार्य और उनके पुत्रो से स्थापित अष्टछाप के कवियो के साहित्य से सगुणोपासना के प्रति लोकप्रियता दिनो दिन बढती गयी। सूरदास आदि की अमर कृतियो ने साबित किया कि सगुणोपासना निर्गुणोपासना से सर्वसुलभ ही नही, वरन् श्रेष्ठ भी है। फलस्वरूप, रसखान और, रहीम जैसे मुसलमानो ने भी कृष्णभक्ति-सम्बन्धी सैकडो सुन्दर पद रचे और सगुणोपासना की महिमा का गान किया। चैतन्य महाप्रभु के व्यक्तित्व से बगाल, उडीसा आदि मे ही नहीं, परन्तु भारत में सर्वत्र कृष्ण भक्ति दिन-व-दिन अधिक आकर्षक होती गयी।

जैसे सूरदास, नन्ददास, कृष्णदास, परमानन्ददास, छीतस्वामी, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास और गोविन्दस्वामी, मीराबाई, रसखान, रहीम आदि कृष्णभक्ति के प्रचारक हुए, वैसे ही स्वामी रामानन्द, तुलसीदास, केशवदास, नाभादास, प्राणचन्द चौहान, हृदयराम, मैथिली शरणगुप्त आदि रामभक्ति धारा की सगुणभक्ति के प्रचारक हुए।

उपरोक्त आचार्यो और उनके शिष्य साधु-सन्तों के सतत प्रयत्नो से उत्तर भारत की परिस्थिति पूर्णतया सुधर गयी। उनकी स्फूर्ति से प्रबल आततायी मुसलमान शासकों के रहते हुए भी अपनी प्राचीन सस्कृति की रक्षा के लिये हिन्दू जनता कटिबद्ध हो गयी और पुन: आर्थिक, राजनैतिक एव धार्मिक क्षेत्रो में प्रगति कर सकी।

श्री वल्लभाचार्य (सन् १४७३-१५३१)

श्री वल्लभाचार्य से प्रतिपादित सिद्धान्त शुद्धाद्वैत या पुष्टि मार्ग कहलाता है। उनके अनुसार परमात्मा और जीवात्माएँ क्रमशः परमात्मा कृष्ण और गोपिया है। वे गोपी वल्लभ श्री गोवर्धननाथ जी या श्रीनाथ जी के उपासक थे। उनसे रचित अणुभाष्य में शुद्धाद्वैतवाद का प्रतिपादन है। शुद्धाद्वैतवाद की मान्यता है कि जीवात्माएँ परमात्मा रूपी अग्नि से निकली हुई चिनगारियो के सदृश है। जीवात्माओ की सत्ता सीमित है और उनकी शक्ति अत्यल्प है। आचार्य जी का शुद्धाद्वैतवाद विष्णु स्वामी जी से प्रतिपादित दर्शन का ही अनुयायी था, किन्तु भक्ति के क्षेत्र मे उन्होने नूतन प्रेरणा दी। उनकी पुष्टि मार्गीय भक्ति मे प्रतिपादित है कि पूजा को सेवा के रूप में परिणत करने से ही शुद्ध प्रेम का उदय होता है और उसमें आत्म निवेदन का प्रमुख स्थान है। श्री वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विठ्ठलनाथ जी से स्थापित अष्टछाप और उनकी कृतियो से सस्कृत, हिन्दी और गुजराती भाषाओ में भक्ति-साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। उनके उपदेशो से सभी वर्णो के लोग प्रभावित हुए। अष्टछाप के प्रधान कवि सूरदास से रचित भ्रमरगीत से जन साधारण को स्पष्ट हो गया है कि निराकारोपासना से साकार पूजा सुलभ -एवं श्रेष्ठ है। इस प्रेरणा का प्रतिपादन सुसमय पर हुआ था। क्योकि शासक अपने निराकारोपासना का जोर से प्रचार करते थे, बलपूर्वक मतान्तरित करते थे मूर्ति पूजा की हँसी उडाते थे। बहुत से विद्वानो के भी मन में उस समय साकार पूजा के प्रति शका के भाव उत्पन्न हो रहे थे तथा जन साधारण को धार्मिक क्षेत्र मे सही मार्ग दर्शको की नितान्त आवश्यकता थी। यह महत्वकार्य वल्लभाचार्य और उनके शिष्यो से हो सका। वल्लभ सप्रदाय के कारण कृष्ण भक्ति धारा से सम्बन्धित हिन्दी-साहित्य का अत्यधिक महत्व है।
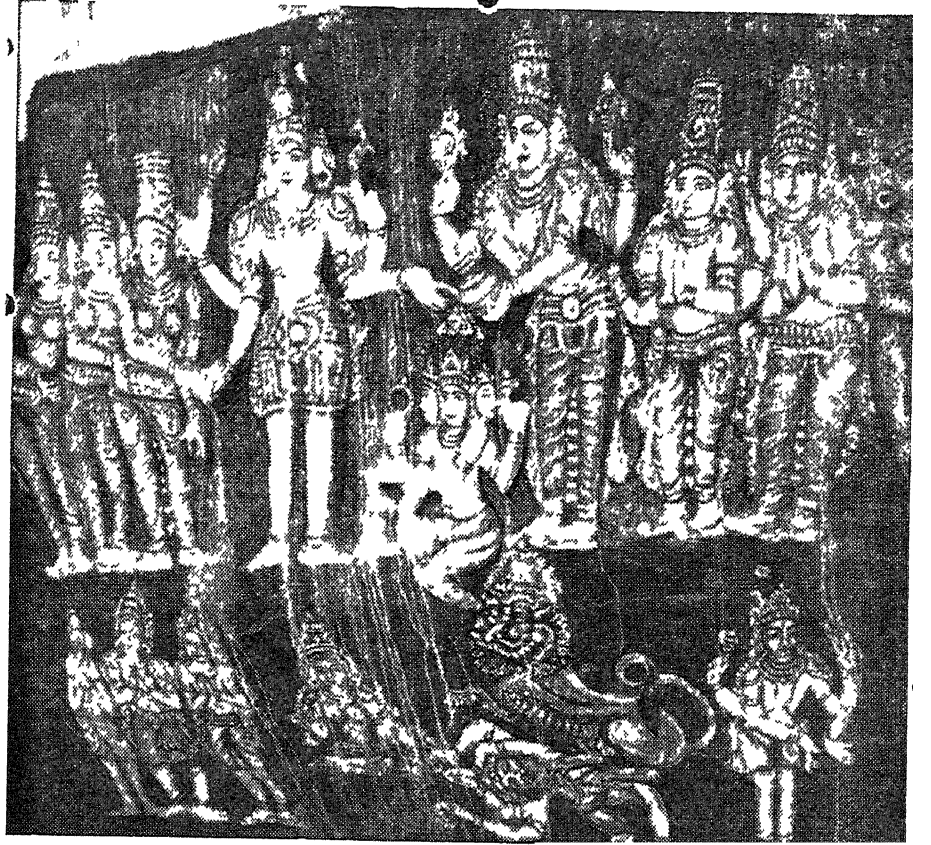
डा० एस. वेणुगोपालाचार्य,
माण्ड्या

श्री वल्लभाचार्य के उपदेशो से अद्वैतवाद और भक्ति में सामजस्य करने के प्रयत्न सफल हुए। भगवदनुग्रह और सख्य एव अनुरागमयी भक्ति की लोकप्रियता बढ़ी।

श्री निंबार्क आचार्य एव निंबार्क सम्प्रदाय के साधु सत

इतिहासकारो के अनुसार आचार्य निंबार्क या बिंबादित्य सन् ११६४ से ११७२ ई. तक जीवित थे। वे द्वैताद्वैतवाद के प्रवर्तक थे। कतिपय विद्वानो का अभिप्राय है कि निंबार्क सम्प्रदाय के मूल पुरुष सनक सनदन थे और निंबार्क से उसका प्रचार हुआ। उनके शिष्यो में श्रीनिवासाचार्य, देवाचार्य, केशवभट्ट, या केशव काश्मीरी, श्री सनातन गोस्वामी, हरिव्यासदेव परशुराम, शोभूराम, श्री माधव, अनन्तराम, पुरुषोत्तम प्रसाद आदि विद्वान है। श्री निंबार्क से निम्नांकित ग्रंथ लिखे गये — गीत भाष्य, सदाचार प्रकार, सविशेष निर्विशेष श्रीकृष्णस्तोत्र, प्रात. स्मरण स्तोत्रम् या वेदान्त गर्भित स्तोत्रम्, श्रुति सिद्धान्त, वेदान्त तत्त्व बोध, दश श्लोकी, वेदान्त सूत्रो का द्वैताद्वैतवादभाष्य, वेदान्त पारिजात इत्यादि। उनकी शिष्य परंपरा से भी बहुत से स्वतत्र ग्रथ और टीका - टिप्पणियां रची गयी हैं।

आचार्य निबार्क के अनुसार जीवात्माएं परमात्मा से अभिन्न हैं, तो भी जीवात्माओ के गुण भिन्न हैं। सभी कर्मो को त्याग कर नवधाभक्ति एव आत्मार्पण करना ही जीवन का परमपुरुषार्थ है। परमात्मा ही से समस्त सजीव और निर्जीव वस्तुओं का अस्तित्व है और स्वतत्र परमात्मा पर ही वे निर्भर हैं। असख्य जीवात्माएं अणु-रूप है और वे अनादि मायाशक्ति से सबद्ध हैं। मुक्तो में पूर्ण मुक्त, बद्ध मुक्त और मुक्त बद्ध नामक तीन प्रकार है। नारद, विश्वक्सेन, कृष्ण की मुरली, वनमाला, आदि पहले प्रकार के मुक्त है। दूसरे प्रकार के मुक्त जन्म-मृत्यु रहित हैं। तीसरे प्रकार की मुक्ति केलिये वे जीवात्माएँ अर्ह है जो शास्त्र विधियो को मान्यता न देकर निम्नस्तर की देवी - देवताओ की उपासना करते हैं। श्रीकृष्ण सत् - चित् और आनन्दमय मूर्ति हैं। उनका शरीर अप्राकृत, दिव्य, सौन्दर्य, कारुण्य आदि श्रेष्ठ गुणो से पूर्ण है। उनके व्यूह और अवतार श्रीराधा उनकी सेवा मे सदा व्यस्त रहती है। सक्षेप में निंबार्क सप्रदाय रामानुजाचार्य के तत्त्व तथा गौडीय सप्रदाय का मिश्रण है। इस सप्रदाय के अधिकाश अनुयायी बृन्दावन, कटक, पुरी, बुन्देलखण्ड, राणीगंज, पंजाब, राजस्थान और मथुरा तथा सलील बाद मे है।

श्री विष्णु स्वामी सप्रदाय या रुद्र सप्रदाय, गौडिय वैष्णव का मूल माना जाता है। यह सप्रदाय रामानुजीय, मध्व और निंबार्क से पहले प्रवर्तित हुआ था। क्योकि इस सप्रदाय के अनुयायी बिल्वमंगल शंकराचार्य के समकालीन थे और वे विष्णु स्वामी सप्रदाय मे दीक्षा लेकर वैष्णव हुए थे। श्रीकान्तमिश्र और श्रीधर स्वामी आदि प्रकाण्ड पण्डित इसी सप्रदाय के अनुयायी बने थे। श्रीधर स्वामी से रचित विष्णु पुराण और भागवत के भाष्यो में विष्णु स्वामीकृत वेदान्त की टीका से अनेक श्लोक उद्धत हैं। गौडिय वैष्णव श्रीधरस्वामी को अपने जगद्गुरु मानते हैं।

श्रीविष्णु स्वामीकृत वेदान्त की टीका का नाम सर्वज्ञ सूक्ति हैं। उनके अनुसार परमात्मा और जीवात्माओ का सम्बन्ध अग्नि और उसके स्फुलिंगो के सदृश है। एकैक परमात्मा और उनकी अपरिमित शक्ति से सृष्ट जगत दोनो एक प्रकार सत्य हैं। मुक्त होने पर भी जीवात्मा ब्रह्म से भिन्न रहकर परमात्मा के भजन मे व्यस्त रहते हैं। ब्रह्म पर माया का प्रभाव कभी नहीं पड़ सकता। परमात्मा के तटस्थ और बहिरंग शक्तियो के विकास से जीवात्मा का विकास
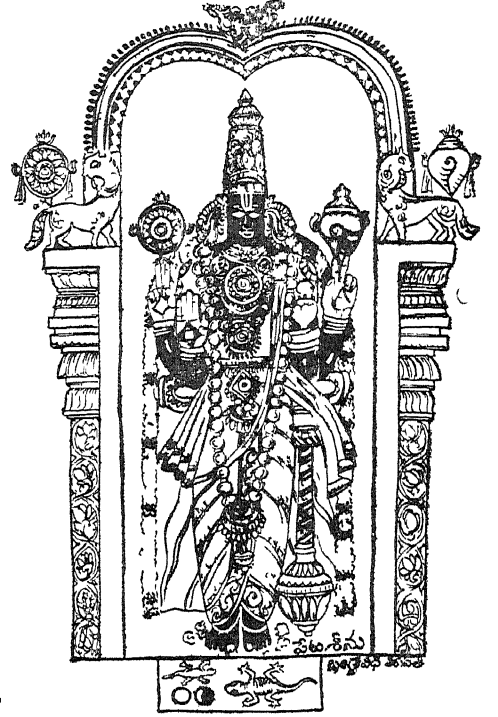
होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इसके फलस्वरूप, परमात्मा के व्यक्तित्व में किसी प्रकार का विकार होगा। श्री विष्णु स्वामी के इष्टदेव नरसिंह थे और वे मानते थे कि विष्णु का शरीर नरसिह के रूप में शाश्वत है। इसी कारण, उनसे प्रवर्तित संप्रदाय का नाम रुद्र सप्रदाय पडा होगा। विष्णु स्वामी के उपदेशों का संग्रह "साकारसिद्ध" नामक ग्रंथ मे क्रोडीकृत हुआ है।

गौडीय सप्रदाय पर बिल्वमंगल के कृष्ण कर्णामृत, श्री कृष्ण कविराज, जीव गोस्वामी, रूप गोस्वामी तथा चैतन्य महाप्रभु की कृतियो का अत्यधिक प्रभाव लक्षित होता है। माधवेद्रपुरी, जयदेव, चण्डीदास आदि भी इसी संप्रदाय के विद्वान लेखक है। श्रीरूप गोस्वामी के अनुसार

(शेष पृष्ठ २५ पर)

(पृष्ठ 14 का शेष)

सद्गुरु की प्रशसा में मीरा गाती है—

पायो जी, म्हे तो, नाम रतन धन पायौ।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु,
किरपा कर अपनायौ।
....
सत की नाव खेवटिया सद्गुरु भवसागर
तरि आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरखि
जस गायौ ॥

तिरुप्पावै के तीसरे पद में आण्डाल ने गुरु के लिए ही 'गाध' शब्द का प्रयोग किया है। इस पद का विशिष्ट अर्थ इस प्रकार है "गुरु के चरण कमलो पर आश्रय पाने पर भगवान की प्राप्ति करके नित्यानद सागर में मस्त रह सकते हैं।" चौथे पद में वर्षा का वर्णन है। परन्तु यहाँ वर्षा शब्द गुरु का ही प्रतीक हैं। आण्डाल का मंतव्य है कि जिस प्रकार वर्षा संसार की जीवराशि के हित का ध्यान रखती है, वैसे ही गुरुकृपा अज्ञानी को भी ज्ञानी बना देती है।

उपर्युक्त विश्लेषणात्मक अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दोनो कवयित्रियाँ—मीरा और आण्डाल - श्रीकृष्ण की अनन्य प्रेमिकाएँ रही। जिस दार्शनिक सत्य की विवेचना उनके पदो में पायी जाती है, उससे भारतीय साहित्य समृद्ध हो पाया है। दोनो अपनी माधुर्य रस - धारा के प्रवाह में न स्वयं बहती गयी ; अपितु अनेकानेक भक्तो को भी बहाने का आपने सुअवसर दिया। कृष्ण-भक्ति - साहित्य में इन दोनो भक्त कवयित्रियो का नाम सदा अविस्मरणीय रहेगा। ★

श्रीकृष्णः मोहेन शोकेन अनुचित स्नेह कारुण्याभ्यां च व्याकुल हृदयं सुहृद्वरं अर्जुनं सान्त्वयितु प्रपन्नाय तस्मै कृपया परया गीतोपनिषदः उपादिशत्। तदुपदेशेन नष्टशोक मोहः लब्ध सम्यग्ज्ञानः पार्थः अन्ते युद्धाय सन्नद्धः भगवदादेश अनुचचार। अत अर्जुनोपरि प्रासादतिशयवतः भगवतः वदनारविन्द स्यन्दित मकरन्दायमानापि अष्टादशाऽध्यायात्मिका गीता। तथापि क्वचित् क्वचित् स्वमतेम काश्चन विषयान् प्रत्येकं श्रीकृष्णः तत्र तत्र पतिपादयति ॥

भगवद्गीतासु श्रीकृष्ण मतम्
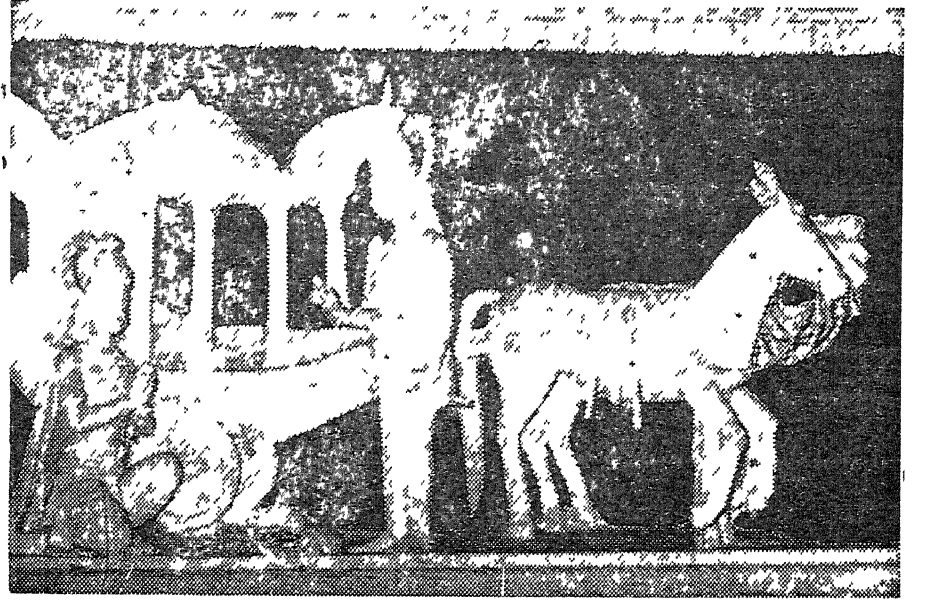
तस्मान् उपनिषत्सु महर्षीणां वाङ्मयेषु महतामाचार्याणा हृदयेषु च विद्यमानाः विषयाः अपि भगवता तत्र गीतासु प्रतिपाद्यन्ते। तदपेक्षया विलक्षणं स्वमतमपि पृथक्त्वेन तत्रतत्र भगवान्प्राचीकटदिति गीताध्यायिनः वय ज्ञातुं ईहामहे ॥

किञ्च भगवान् कांश्चन विषयानुपदिश्य तत्प्रतिष्ठार्थं महतामाचार्याणां सन्निधौ कर्तव्यां शुश्रूषामपि "तद्विद्धिप्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपयेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनः तत्व दर्शिनः ॥" इति अर्जुनायोपादिशत्। भगवानपि आचार्यः एव, यथा—कैमप्याव्य गुरुं वन्दे कमला गृहमेधिनम्। प्रवक्ताच्छन्दसां वक्ता पञ्च रात्रस्य यः स्वयम् ॥ इति खलु महान्तः प्रथम गुरू तमाहुः। "शिष्यस्तेऽहं शाधिमां" इति श्रीकृष्णः शिष्यतया उपसन्नमेव अर्जुनं "तत्व दर्शिनः आचार्याः ज्ञानिनः भीष्मादयः त्वया उपसत्तव्याः" इतिउपदिशतिचेत् साक्षाद्भगवदपेक्षया आचार्य सकाशात् ज्ञानार्जनमेव श्रेष्टमिति तस्यमतमिति वयं ऊहितुं पारयामः ॥

लोके बहवो विद्या सम्प्रदायाः विद्यन्ते। यथा-व्याकरण सम्प्रदायः पाणिनि प्रवर्तितः। अतः "पाणिन्युपज्ञं व्याकरणं" इत्युच्यते। एवं श्रीकृष्ण विद्या सम्प्रदायः कश्चन विद्यते। यस्मिन् श्रीकृष्ण प्रवर्तिते कर्मयोगः परम्परया आगच्छति। तथाहि—अर्जुन प्रश्नस्य समाधानं वदन् भगवानुवाच "इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्" ॥ इति। एवं परंपरा प्राप्त इमं राजर्षयो विदु." ॥ इति ॥

हे अर्जुन! युद्धे त्वां प्रोत्साहयितुं मयाऽव्य कर्मयोगः नोपदिश्यते। किन्तु एतन्मन्वन्तरे पूर्वमहं अमु योग विवस्वते प्रावोचम्। ततः विवस्वान् मनवे प्राह। मनुः स्वशिष्येभ्यः अवदत्। इत्थ सम्प्रदाय परम्परा प्राप्तं पूर्वे सप्तर्षयः अविदुः। इत्यर्थः। पृथक्सम्प्रदाय मूल पुरुषस्य परम पुरुषस्य प्रत्येक मतसत्वमपि नैसर्गीकमेव॥

किञ्च स्वाऽभिमतं कर्माचरितवतोऽपि विनिन्दति भगवान्। यथा—"यमिमांपुष्पितां वाच प्रवदन्त्यविपश्चितः। वेदवादरता पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः॥ कामात्मान स्वर्गपराः जन्म कर्म फलप्रदाम्। क्रियाविशेष बहुलां भोगैश्वर्य गतिं प्रति ॥ इति ॥ ऐहिकामुष्मिक फलभोग साधनभूतां आपाद रमणीयां पुष्प मात्र प्रयोजनां पुनर्जन्म फल साधिकां च भोगैश्वर्य गतिं प्रति प्रवर्तमानां वाच प्रवदन्ति केचन। ते काम्य कर्मपेक्षया मोक्षसाधन भूतमुपाय नाभ्युपगच्छन्ति। केवल वेदेषु अर्थवाद वाक्यानि श्रुत्वा मुग्धाः भोगैश्वर्य कामनया अपहृत हृदयाः, अतएव अविद्वासः अपवर्ग मार्गात् प्रभ्रष्टा; भवन्ति, इति भावः॥

श्री वी. नरसिंहन्, कूचिपूडि.

अन्यत्र च स्वर्गार्थं काम्य कर्म प्रसक्तानां परिवृत्तिं प्रदर्शयति "एव त्रयी धर्म मनुविष्टाः गतागत कामकामा लभन्ते ॥" इति। एतादृशाना बुद्धौ आत्म याथात्म्य ज्ञान पूर्वक अनुष्ठीयमानः कर्मयोगः न तिष्ठतीत्यपि भगवान् वदति "भोगैश्वर्य प्रसक्तानां तयापहृत चेतसां व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥" इति। इत्य च भगवतः अभिमतं पृथगवस्थित केपिदेव अनुसरन्ति। केचिचाऽननुतिष्टन्तः तेन विगर्ह्याः भवन्ति इति ज्ञायते ॥

तृतीयेऽध्याये पूर्वं कर्मयोगस्यावश्यं कर्तव्यतामेवोक्त्वा ज्ञानयोगाधिकारिणामपि कर्म-

योगः न त्याज्यः इति स्वमतमाविष्चकार। तत्र च जनकादीन् कर्मयोगेन ससिद्धि प्राप्तान् उदाजहार। एवमुक्त्वा श्रेष्ठः शिष्टश्च पुरुषः लोकसग्राहार्थं अवश्यं कर्मयोगमनुतिष्ठेदेव इत्यपि आह। तत्र च आत्मानमेव निदर्शन दर्शयति च। यथा—

न मे पार्थाऽस्ति कर्तव्य त्रिषुलोकेषु किञ्चन।
नाऽनवाप्तमवाप्तव्य वर्त एव च कर्मणि ॥

इति।

अवाप्त समस्त कामस्य परिपूर्णस्य मम मम त्रिषुलोकेष्वपि यत्किञ्चित्साधयितु अनुष्ठेय कर्म न विद्यते। तथापि लोकरक्षार्थै स्वोचित कर्मणि प्रवर्तएवाहम्। यद्यहं तन्द्रां परित्यज्य स्वकर्मानुतिष्ठन् न स्यांचेत् तर्हि मम मार्ग-मनुमरन्त्यः प्रजा· नरकादि दुर्गतिषुनष्टाः भवेयु। तथा च लोकमर्यादायाः अहमेव विघटयिता स्याम्। अतः कर्मानुष्ठान मुख्य तेन सह ज्ञान सम्पादन मेव कर्मयोगः भव-तीति। उपरिच प्रतिपादयति भगवान्—

अन्ते स्वाभिप्रायं प्रस्तौति "मयि सर्वाणि कर्माणि सन्यस्याऽध्यात्मचेतसा। निराशी-र्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥" इत्य-ष्विश्चकार। अय भावः— श्रुतिस्मृति सिद्धे-नात्म ज्ञानेन समन्वितः मदाराधनार्थं अना-कांक्षित फल अन्तर्यामिना मया कार्यमाणं स्वोचित कर्म ममत्व रहितः कुरु। तथा तस्य कर्मण आत्मज्ञान साधनभूतस्य योगरूपतया अपवर्ग हे-भूतया बन्धकत्व शङ्कारूपः ज्वरः तव न भविष्यतीति त्वयुध्यस्व" इति। एव मुक्त्वा" ये मे मतमिदं नित्यं अनुतिष्ठन्ति मानवाः। श्रद्धावन्तोऽनुसूयन्तः मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभि. ॥" इति। शास्त्रविहिते कर्मणि श्रद्धावन्तः दोषबुद्धिरहिताः स्व स्व विहित कर्मानुतिष्ठेयुर्नराः इति मे मतम्। एतदनुस-रन्तः प्राचीन सर्वपाप निबर्हण द्वारा मुक्ति मार्गमवलम्ब्य उत्तीर्णाः भवेयुः ॥

अब की बेर उबारो

श्री जगमोहन चतुर्वेदी,
हैदराबाद.

सब विधि मोहि अब, तव चरणन को ही एक सहारो
अगणित पाप किए आ जग में, कबहुँ न तोहि पुकारो
लाख चौरासी योनि प्रभो या जगमें, तऊ न तोहि निहारो
मानस तनु, कर दया, दियो दयानिधि तबहुँ ताहि बिसारो

माता मेरी मोहि अब की बेर उबारो ॥

मोसम कौन अधम और पापी
निशि-दिन भोग करहुँ बहु भाँती
कबहुँ न दान दियो इन हाथन
लेतु रहो सबके ही दानन

माता मेरी ·· ॥

पेट पुजावन हेतु करहु श्रम
तबहुँ न पावहु एक क्षणहि शम
इत-उत चितवत वायस के सम
तऊ न मिटो मनोरथ नेक मम

माता मेरी .... ॥

कहा लाभ अँखियाँ दुइ पायी
दर्शन कियो न हरि के पायी
कहा लाभ कर्ण दुइ पाए
सुनी न कथा हरि की मन लाए

माता मेरी ...... ॥

लहहु न लाभ दुइ हाथन केरे
करी न सेवा प्रभु के नियरे
चरणन हू दुइ वृथा भ्रमत फिरे
कीन्ही नहिं इन्ह तीर्थन फेरे

माता मेरी ...... ॥

जिह्वा मेरी षट-रस भोगी
लही न तोष भई अति रोगी
कीर्तन कियो न हरिरस चाखी
विलपत रहत करत कटु भाखी

माता मेरी ...... ॥

नासा मेरी दुइ छिद्र समाहित
प्रभु चरण अर्पित, सुमन-सुवास वंचित
करो न इन कबहुँ काहू को हित
छीक करहिं सब को ही अनहित

माता मेरी ...... ॥

मेरी अभिलाषा कब होगी पूर्ण अवनि पर
कब धरिहों तव चरण-रज शीष पर
तव प्रसादी केसरी चन्दन को तिलक भाल पर
और तुलसी की माल हृदय पर

माता मेरी ...... ॥

येत्वेतदभ्यसूयन्तो नाऽनुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञान विमूढांस्तान् विद्धिनष्टानचेतस: ॥ "
॥ इति ॥

हे अर्जुन! अश्रद्धाक्तव: असूयालवश्च भूत्वा ये नरा: एतन्मेमतं नाऽनुवर्तेयु: सर्व प्रकारेण ज्ञानशून्यान् नाशमापन्नान् तान्विद्धि: । इति च अर्जुनमबोधयत् ॥

एतादृशमन्यत्स्वमत सप्तदशाऽध्याये अष्टादशश्लोकेन प्रस्तौति । उदारा: सर्वएवैते ज्ञानी-त्वात्मैवमे मतम् । इति । ये भक्ता: मत्त: यत्किञ्चिदपि फल गृहीतुमिच्छन्ति, ते महौदार्यगुणं प्रकाशयन्त: ममोपकुर्वन्ति । ते मद्विषये वदान्या: उदारा: इद मे मतम् । लौकिकास्तु दातृनेवोदारान् मन्वन्ते । अह तु मत्त: प्रतिगृहीतृनेवोदारान् मन्ये । "अन्त: प्रविष्ट. शास्ता जनानां सर्वात्मा" । अन्त: बहिश्चतत्सर्वं व्याप्य नारायणस्थित: " ॥ इति। इत्यादिका उपनिषद: परमात्मान मां सर्वेषां चेतनानां अन्तर्यामिणमात्मानं आह । किन्तु य: मामेवानुत्तम प्राप्यं मन्यमाना: मया विना आत्मधारणमलभमान: भक्त: ज्ञानी च स एव मे आत्मा मदन्तर्यामि इति मे मतम् । यतो हि अहमपि तद्योगक्षेमचिन्तक: तेन विना आत्म-धारणमलभमान: अस्मीति ॥

तथैव अष्टादशाध्याये मोक्षसाधनभूततया उपदिष्टयो: त्याग सन्न्यासयो: स्वरूपभेद ज्ञातुं पृष्टवते अर्जुनाय तत्स्वरूपोपदेशपर: श्रीकृष्ण: तत्रापि स्वमतमाविश्चकार । यथा—

काम्यानां कमणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदु:।
स्वकर्म फलत्यागं प्राहुस्त्यागं विलक्षणा: ॥

इत्यनेन त्याग सन्यासयोर्विषये वादिनां वैमत्यं उक्त्वा स्व मतेतु तयोरैक्यमेवाहु: । केचित ऐहिकामुष्मिक फल कामनया अनुष्ठीयमान काम्य कर्मणां स्वरूपत्यागं सन्यासतया मन्यन्ते। अपरे पुन: विद्वांस: नित्य नैमित्तिक काम्य-रूप सकल कर्मणां अनुष्ठानेऽपि तत्फल काम-नात्यागमेव त्यागपदार्थमलिप्रयन्ति । किंच "त्याज्य दोषर्वादव्येके कर्मप्राहु: विचक्षणा: " कपिलमतानुसारिण: केचिद्विचक्षणा: वैदिका: अपि यज्ञदान तपप्रभृति सत्कर्म रणद्वेष मूल-तया दोषवदित्यननुष्ठेयमेवाहु: । एव स्थिते श्रीकृष्ण: कथं सन्यास त्यागयो: स्वरूपमनुते? एवमाह—"निश्चयश्रृणुमेतत्र त्यागे भरत-सत्तम ।

त्यागोहि पुरुषव्याघ्र ! त्रिविधा: संप्रकीर्तित:॥ इति। त्रिविध त्यागपूर्वक कर्मयोगमनुतिष्टन्नपि नर: सन्यासीत्यागीच भवति । न तु कर्म स्वरूपाऽनारम्भात् सन्यासी वा त्यग वा भवेत् यथा—

न कर्मणामनारम्भात् नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च सन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥
इति पूर्वमेव उक्तम् ॥

अतश्च फल सग कर्तृत्व बुद्धित्याग: एव सन्यासत्याग पदाभिधेयतया तदिष्ट: । यतोहि "मयि सर्वाणि कर्माणि" इत्यादि पूर्व दर्शित श्लोकेन" कर्मजन्यं स्वर्गादि फलं न ममा-पेक्षितं इति फलत्याग:, इद कर्म न मच्छेष-भूतं" इति सगत्याग:, अस्य कर्तापि मद्वारा ईश्वर एव साक्षात्नाऽह ' इति कर्तृत्व त्याग: इति पूर्वमेव कर्मयोगिन: त्यागत्रय उपदर्शितम्॥

अत: कर्मस्वरूप त्याग: न भगवत: इष्ट: इति स्वीकार्यमस्माभि: । अतएव उपरि एव-माह—

यज्ञदान तप:कर्म न त्याज्यं कर्ममेवतत् ।
यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥
इति ।

वर्णाश्रमाचवस्थाद्युचितानां यज्ञदान तपसां कर्मणां भगवदाराधन वेषाणां अनुष्ठानेन पाप विनश द्वारा पुरुषस्य पावनत्वमेव भवति । नतु बन्धकत्वमिति । तादृशं कर्म नत्याज्य कर्तव्यमेव । इत्य कृत्स्नाया: अपि भगवद्गीताया: उपनिषत्सारभूताया: भगवदुक्तत्वेऽपि तत्र क्वचित् क्वचित् स्वकीय मतमिति किंचित् भगवता श्रीकृष्णेन पृथगुच्यते । तादृश मतं किमिति सुसूक्ष्म परिज्ञानमेव गीतासारभूतम् ॥*

तेलुगु मूल
श्री एस. बी. रघुनाथाचार्य एम. ए,
एस वी यूनिवर्सिटी,
तिरुपति

हिन्दी अनुवाद
श्री सी रामय्या.

सकल देवता पूजा विधि

हम सब लोगो के व्यक्तित्व तथा प्रवृत्तियो में काफी अंतर है अत यह सहज ही है कि हमारी आराधना तथा पूजाविधान में भी अवश्य ही विभिन्नता रहेगी। आगमशास्त्र, प्रतिष्ठित मूर्तियो की विविध आराधन-बिधिया बताती है। किसी आगम शास्त्र से भी असंबंधित हमारे देश में अनेक मन्दिर है। इतना ही नही घर घर में हम अपने इष्ट देवताओ की पूजा आराधना करते रहते है। सभी लोगो के समान रूप से आचरणयोग्य पूजाविधान हमें कहीं भी नहीं मिलता है। इस कमी को दूर कर सब लोगो के लिए एक पूजाविधि लिखी जाय तो अच्छा हो, यह संकल्प कई दिनो से मन मे था। लेकिन वह कार्यान्वित न हो सका। भावनाओ को कार्यरूप देकर साकार करना क्या आसान बात है? इस प्रयत्न में कितने अवरोधों का सामना करना पड़ेगा यह आपसे अविदित नहीं है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान के भूतपूर्व न्यासमण्डल के अध्यक्ष डा० सी. अन्नाराव महोदय धार्मिक सेवा तत्पर तथा देवताराधन मे अधिक श्रद्धा-भक्ति रखनेवाले है। उन्होने ही इस पूजा विधान सकलन कार्य केलिए प्रेरणा दी। मैने जो सीखा, उसी के अनुसार इस को बताया। यदि भाव का मतलब जाना जाय तो भगवान के ऊपर मन लग जाता है। यदि भगवान में नहीं लगा तो वह पूजा व्यर्थ ही है। इसलिए हिन्दी मे भी अनुवाद किया गया है। अपने अपने इष्टदेवता के नाम सकीर्तन केलिए हरएक उपचार में ऐसा रिक्त स्थान छोडा गया है। यह प्रथम प्रयत्न है। यह समझा जा सकता है कि इसमें और भी कुछ परिवर्तन किया जाय तो अच्छा हो। यदि आप उन को सूचित करें तो समुचित परिवर्तनो को दूसरे सस्करण में स्थान दूंगा।

साधको केलिए उपयुक्त पूजाग अनुबधो में दिया गया है। प्रथमानुबध में कुछ सुप्रभात, द्वितीयानुबंध में कुछ स्तोत्र, तृतीयानुबध में कुछ सूक्तियो का संकलन किया गया है। ये केबल उदाहरणमात्र है। यदि कोई अपने इच्छित और भी कुछ विषयो को प्राप्त करना चाहे तो उनका समावेश कर सकते है।

इस संकलन कार्य केलिए प्रेरणा देनेवाले ति ति दे के भूतपूर्व न्यास मण्डल के अध्यक्ष डा० सी अन्नाराव तथा इसे प्रकाश में लानेवाले ति. ति दे के भूतपूर्व कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी एस. राजगोपालराजु, ऐ.ए एस महोदयों के प्रति मै अपने धन्यवाद प्रकट करता हूँ। हिन्दू धर्म प्रतिष्ठानम् ने इसे प्रकाशित करने का सकल्प किया है। उस के अधिकारियो तथा उसके कार्यदर्शी डा० डो अर्कसोमयाजी को भी मै धन्यवाद देता हूँ। संकलन कार्यक्रम में मदद देने वाले श्री एम. आर. सपत्कुमार भट्टाचार्य जी को भी मै धन्यवाद देता हूँ। तेलुगु सप्तगिरि में इसे पढकर पुस्तक रूप से इसे प्रकाशित करने केलिए सलाह भेजनेवाले अनेक पाठक महोदयो को मै तहे दिल से धन्यवाद प्रकट करता हूँ। इस ग्रन्थ को सुन्दर रूप से मुद्रित करनेवाले ति ति. देवस्थान के प्रेस मैनेजर तथा अन्य कर्मचारियो को मेरे हार्दिक धन्यवाद।

सकलदेवतापूजा विधि—

शुक्लाबर धर विष्णुं
कौसल्या सुप्रजाराम
उत्तिष्टोत्तिष्ट
मातः समस्त
आत्मा त्वं

श्री गुरुभ्योनमः

इस मंत्र को जपते हुए अपने गुरुदेव को सन्निहित समझकर इन को नमस्कार कर "हरिः ओम्" कहकर भगवान का स्मरण करना चाहिए।

पूजा केलिए ताबे के गिलास (पञ्चपात्र) मे पानी, ताबे की उद्धरिणी, ताबे की थाली. तीर्थपात्र, पुष्प, गन्ध, घंटी, अक्षत, शक्ति के अनुसार पचामृत, गोक्षीर, भोग लगाने केलिए मिश्री अंगूर या फल या पक्वान्न, धूपदीप, आरती के लिए कपूर इत्यादि को पहले ही संग्रह करके पास रखना चाहिए।

पूरब अथवा उत्तर दिशा की ओर मुंहकर बैठकर दैवाराधन करना चाहिए। अर्थात अपने सामने आराध्यमूर्ति को विराजित चाहिए। दक्षिण अथवा पश्चिम की ओर आराध्यमूर्तियो का मुख करना चाहिए।

सुविधा हो तो प्रतिदिन शिरस्नान कर पूजा का प्रारंभ करना चाहिए। ऐसी सुविधा न होने पर कम से कम कंठस्नान कर पूजा का आरंभ करना चाहिए। अपने अपने संप्रदाय के अनुसार गोपीचन्दन, विभूति अथवा तिलक धारण कर आसन पर बैठना चाहिए।

घंटानाद:

घटानाद मंत्र का उच्चरण कर घंटी बजाना चाहिए ।

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं रक्षसाम् ।
कुर्याद्घंटारावं तत्र देवताह्वानलांछनम् ॥

(पूजास्थल पर) देवताओ के आगमन तथा राक्षसो के निर्गमन केलिए देवताओ को बुलाने केलिए घंटी को बजाना चाहिए ।

भू(त) शुद्धिः

भूतशुद्धि मंत्र का जप कर पीछे की ओर अक्षतो को डालना चाहिए ।

अपसर्पंतु ये भूताः यें भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्त्वाज्ञया हरेः ॥

दैवकार्यों में विघ्न डालनेवाले तथा इस अर्चना भूमि में रहनेवाले समस्त भूत श्रीहरि की आज्ञा से यहा से हट जावें ।

आचमनम्

ताबे के (पञ्चपात्र) गिलास मे स्थित पानी को उद्धरिणी से बाये हाथ से लेकर दायें हाथ में डालकर—

अच्युतायनमः
दामोदरायनमः

अच्युतायनमः } अच्युत केलिए नमस्कार
केशवायस्वाहा } केशव केलिए समर्पित करता हूँ

ऐसा कहकर जल का आचमन करे । फिर उपर्युक्त रीति से जल लेकर—

अनंतायनमः } अनंत केलिए नमस्कार
नारायणायस्वाहा } नारायण केलिए समर्पित करता हूँ ।

ऐसा कहकर पानी का आचमन करना चाहिए । फिर उपर्युक्त रीति से उदक लेकर

गोविन्दायनमः } गोविन्द केलिए नमस्कार
माधवाय स्वा } माधव केलिए समर्पित करता हूँ । ऐसा कहकर पानी का आचमन करना चाहिए

गोविन्दाय नमः—	गोविन्द	केलिए नमस्कार
विष्णुवे ,,	विष्णु	,, ,,
मधुसूदनाय ,,	मधुसूदन	,, ,,
त्रिविक्रमाय ,,	त्रिविक्रम	,, ,,
वामनाय ,,	वामन	,, ,,
श्रीधराय ,,	श्रीधर	,, ,,
हृषीकेशाय ,,	हृषीकेश	,, ,,
पद्मनाभाय ,,	पद्मनाभ	,, ,,
दामोदराय ,,	दामोदर	,, ,,

स्वामी की सन्निधि में दीप प्रज्वलित होना चाहिए ।

प्राणायाम

उंगलियो से नाक पकडकर प्राणायाम मंत्र से इष्ट देवता का ध्याना करना चाहिए, फिर सास को धीरे से छोडना चाहिए ।

अंगुल्यग्रेर्नासिकाग्रं सपीड्यं पापनाशनम् ।
प्राणायाममिद प्रोक्तमृषिभिः परिकल्पितम् ॥

अगुल्याग्र से नाक मूंदना पापनाशक है" । ऋषियो से कल्पित इसको प्राणायाम कहा गया है ।

सकल्प

निम्नलिखित रूप से अपने अस्तित्व से सबंधित सपूर्ण विवरण सहित सकल्प बोलकर अंत मे "करिष्ये" कहते समय "अक्षत तथा उदक" को हाथ से लेकर थाली मे छोडे ।

"ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा प्रीत्यर्थं
शुभे शोभने मुहूर्ते
आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृध्यर्थं

. . प्रीत्यर्थं षोडशोपचार पूजां करिष्ये ।

अपने समस्त पापो के नाश होने से .
प्रिय लगने केलिए, शुभ शोभन मुहूर्त में, श्री महाविष्णु की आज्ञा से व्यवहृत ब्रह्म की आयु के दूसरे अर्ध भाग मे श्वेत वराह कल्प में वैवस्वत मन्वतर में कलियुग के प्रथम पाद में, जबूद्वीप में, भरतवर्ष में मेरु पर्वत की दक्षिण-दिशा में, श्रीशैल तथा श्रीरग दिशा को यहा पर बताना चाहिए) प्रदेश में, स्व (यदि स्वगृह नही हो तो "वसतिगृहे" बताना चाहिए) गृह में अब चलनेवाले व्यावहारिक चान्द्रमान से . वर्ष मे . अयन में... ऋतु में मास में . पक्ष में . तिथि में . वार में शुभ नक्षत्र, शुभ योग, शुभकरण-गुण विशेष विशिष्टमय इस शुभ तिथि में श्रीमान . गोत्रज, नामधेय, धर्मपत्नी समेत (मै) श्रीमान्, गोत्रज, नामधेय, धर्मपत्नी समेत (अपनी आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धि केलिए प्रीति केलिए षोडशोपचार पूजा करता हूँ । (यहां पर सवत्सर इत्यादि पचाग के द्वारा जानकर उच्चारण करना चाहिए नीचे उदहृत "श्रीमान्" इत्यादि पदो का प्रयोग करना चाहिए वे इस प्रकार है । (क्रमश)

सुरुटुपल्लि में विराजमान श्री पल्लिकोंडेश्वर स्वामी
फोटोः श्री एस. वी के एस श्रीनिवासन्, तिरुपति
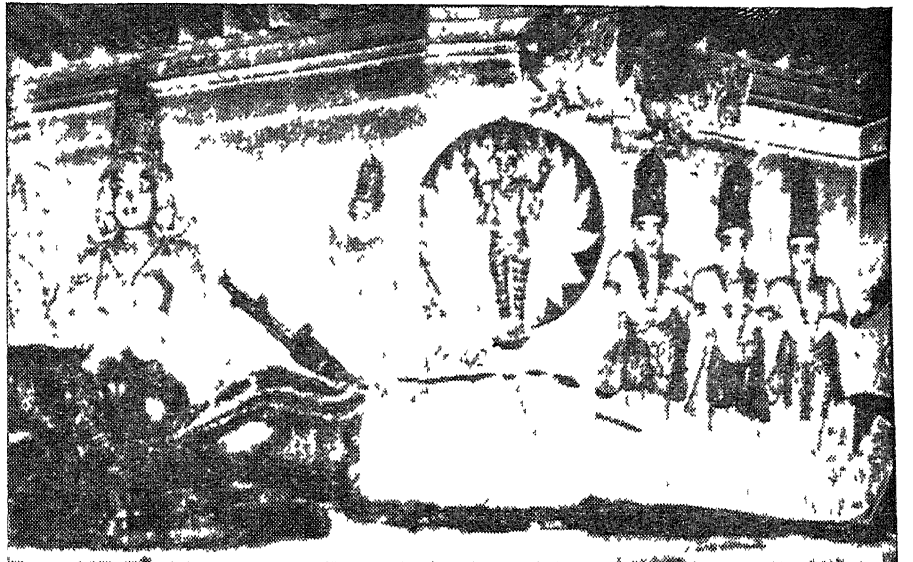
सूर भक्ति के परिप्रेक्ष्य में प्रेम और अहं

जीवन में सम्पूर्ण विषमता और विसगतियो के मध्य मनुष्य सहज हो कर जी सकता है। विष को आत्मसात् करने की क्षमता उस में जाग सकती है। दुर्गम, दुरुह मार्ग भी उस के लिए सहज हो सकते हैं, वह कब और किस स्थिति में जब उसका हृदय प्रेम से ओतप्रोत हो। उसका मन दर्पण सा स्वच्छ हो। उसके विचार हिमगिरि से उच्च और शुभ्र हो। सात्विकता की कोख में जनमता प्रत्येक भाव शिशु प्रेम की किरणो से प्रतिबिम्बित हो कर अनेक रगों में बिखर जाता है। यह रंग सौम्य, आकर्षक व सत्व प्रेरित होते हैं। मन की भाव-भूमि पर इन रंगों के हस्ताक्षर प्रवंचक नहीं अपितु "सत्यं, शिवं सुन्दरम्" की पृष्ठभूमि का संकेत देते हैं।

प्रेम की डगर देखने में और अनुभूत करने में सरल है किन्तु अभाव की स्थिति में विरह के मोड़ पर जब यह लाकर खड़ा कर देती है तब विरही को मर्मान्तक पीड़ा देती है। इस वेदना को वही समझ सकता है जिसने इसके दशो को सहा है। मीरा, कृष्ण के विरह में जीवन को गीली लकड़ी के सदृश्य सुलगाने के लिए छोड़ देती है। वह जानती है कि मेरे इस दर्द को कोई बांट नहीं सकता। न कोई मेरे प्रेम को समझ सकता है और नहीं धरोहर के रूप में मिली इस विक्षिप्तावस्था को अनुभूत कर सकता—

हेरी मै तो प्रेम दीवानी
मेरा दर्द न जाने कोय।

इसी प्रकार कृष्ण के मथुरा गमन के पश्चात गोपियां अनुभव करती हैं कि कृष्ण का प्रेम दुधारी तलवार बन गया है। न वह जीने देता है और न ही मरने देता है। घावो की गहराई और उनकी संख्या को बढ़ाता चला जाता है। सत्य तो यह है कि प्रेम से अधिक कृष्ण के रूप ने तलवार का कार्य किया है क्योकि उसी के घातक प्रहार से सारी ब्रज बालायें आहत हुई हैं। घायल होने पर भी वे पराजित नहीं हुई उनका काम क्षेत्र सजग व सक्रिय है इसी कारण उन्हें प्रेम में ऐसी स्थिति से साक्षात्कार करना पड़ा रहा है। यह वह जान चुकी है कि—

प्रेम को पंथ कराल महा
तरवारि की धार पै धावनी है॥

फिर भी वह दौड़ती है, निःश्वासें भरती है। अपनी वेदना और आहों से वातावरण को प्रभावित करती है किन्तु हार नहीं मानती है। कोई पल, प्रहर, आयाम कृष्ण की स्मृतियों से रिक्त नहीं है। कृष्ण मिलन की उत्कंठा और उनके सान्निध्य की अपेक्षा के माध्यम से सूर ने

डा० इन्दुवशिष्ट, हैदराबाद.

वस्तुतः प्रेम और काम का संघर्ष दिखाया है। मीरा के प्रेम को लोकापवाद मान अपमान तथा विरोधी कुटिल मनो से संघर्ष करना पड़ा था। कबीर का प्रेम भी मीरा के सदृश्य संघर्ष रत रहा किन्तु सूर का प्रेम सघर्ष अपनी विशेषता लिये हुए है। सयोग के क्षणो में गोपियां श्रीकृष्ण के समक्ष नत नहीं होती हैं स्वय को किसी भी स्थिति मे पराजित अनुभूत नहीं करना निश्चय ही उच्च प्रेमादर्श है। काम की अपेक्षा, प्रेम का एकरूप है। इस प्रेम के रूप को सूर ने जिस परिवेश में रखा है वह अनुपम है। वातावरण, षट् ऋतुएं सभी वियोग और संयोग में भावनाओं कों उद्दीप्त करती है। इनके आक्रामक रूप को देख गोपियां अनुभव करती हैं।—

काम नृप ससि नेव अबलनि दुर्गहृत
समीर।
विपिन सेना साज नव दल बदल बन्दी
कीर॥

सूर के विरह मे यही स्वर यत्र तत्र प्रचुर मात्रा में प्रतिध्वनित हुआ है। वल्लभाचार्य जी ने कृष्ण अर्थात् भगवान का प्रेम प्राप्त करने के लिए श्रीमद् भागवत आदि ग्रंथ के अनुसार नवधा भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन) की राह पर चलने का आदेश दिया है। ईश्वर की पूजा उसकी आराधना सर्वभाव से की जा सकती है। कृष्ण को द्रोह में, भक्ति में, भाव और कुभाव में सभी भावनाओं की प्राचीरों में बन्दी बना कर प्रेम किया जा सकता है। प्रेम के क्षेत्र अलग अलग हैं किन्तु कृष्ण तक पहुंचने का लक्ष्य सभी का एक है। अर्थ-हीन वस्तु भी निरन्तर सम्पर्क मे रहे तो उसके प्रति भी अनचाहा स्नेह पनपने लगता है और धीरे-धीरे वह एक सत्य बन जाता है। भागवत में कहा है कि—

कामं क्रोधं, भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेव च
नित्य हरो विदधतो यान्ति तन्मयतां हिते॥

कोई भी भगवान में काम, क्रोध, भय, स्नेह, ऐक्य अथवा सौहार्दभाव सदा रखता है वह भगवन्मय हो जाता है। यदि प्राणी अन्तःकरण, प्राण, इद्रिय, विषय, गृह, आदि में ईश्वरीय सत्ता की अनुभूति करता रहे, इनका सम्बन्ध ईश्वर के साथ समझता रहे तो उनकी कलुषता भी ज्ञानियों के ज्ञान की कसौटी पर परखने के पश्चात् खरी निकलेगी, संसार का प्रपंच नष्ट हो जाएगा और जीव ईश्वर की प्राप्ति सहज ढंग से कर लेगा। नवधा भक्ति का समर्थन करने वाला भक्त अपनी साधना के माध्यम से ईश्वर तक पहुंचता है किन्तु प्रेम लक्षणा भक्ति अपने आप में विशिष्ट अनुपम है। वल्लभाचार्य जी द्वारा प्रतिपादित दशम भक्ति प्रेम-लक्षणा भक्ति है। प्रेम की राह पर चल कर जीव कृष्ण के स्वरूप से परिचित होता है। गोपियों का प्रेम इसी दशम प्रेम-

लक्षणा भक्ति का रहस्योद्घाटन करता है। सूर ने गोपियो के माध्यम से स्व-प्रेम की भावनाओं को रुपायित किया है।

लौकिक जगत किसी प्रकार भी मर्यादारहित या परम्पराओ के प्रतिकूल मान्यताओ को, स्वीकार नही करता है। उसकी दृष्टि में समाज विरोधी तत्वो का ग्राह्य रूप मलिनता का द्योतक है। इस परिप्रेक्ष्य में गोपियो को प्रेम मार्ग मे आने वाली विषमताओ से जूझना पडा है। वे कुल लोक और वेद मर्यादा का उल्लघन करती हुई प्रेम की साधना करती है। कुरग नाद के स्वरों में डूब कर स्वय को मृत्यु के हाथो सौप देता है और कृष्ण की गोपियां बासुरी की धुन मे मर्यादा, लोक-लाज की सीमाओ को तोड़ती हुई अपने प्रिय कृष्ण तक पहुच जाती है। उनकी दृष्टि में प्रेम का पंथ ही जीवन की सार्थकता का पंथ है। ये मर्यादा, मानापमान लोक-लाज आदि सभी कुछ तो उनके लिए अर्थहीन है। कृष्ण का सान्निध्य निःसन्देह जीवन का लक्ष्य बन गया है, उनकी स्मृतिया धरोहर हैं और सत्यानुभूति कृष्ण के अभाव में उनके रूप को कल्पना जगत में रुपायित करती है। परम सुख का अनुभव दुख की प्रचण्ड स्थिति में भी होता है क्योंकि स्मरण का प्रत्येक पल कृष्ण से जुड़ा है। इस पराकाष्ठा का स्पर्श करने वाली गोपियां किस प्रकार समाज या लोक को महत्व दे सकती है। वंशी यह माध्यम भी है जिसके स्वरो को छेड़ कर प्रियतम प्रेमियो को आमत्रित करता है—

"सुनहु स्याम अब करहु चतुराई,
क्यों तुम बेनु बजाय बुलाई।
विधि मरजाद लोक की लज्जा,
सबै त्याग हम धाई आई॥

प्रेमिकाएं भी जानती है कि कृष्ण उनसे पूछेंगे और कहेंगे कि वेद-मर्यादा नाम भी कोई चीज है जिसका पालन उन्हें करना चाहिए। कृष्ण भी तो गोपियों के प्रेम को परखना चाहते है आस्था और विश्वास की कसौटी पर। उन का चातुर्य सफल हो जाता है वे स्मरण कराते है कि हमको भी विधि का भय है और यदि तुमने भी लोकमर्यादा का त्याग किया तो परलोक कैसे मिलेगा। तुम्हारी मुक्ति सम्भव नहीं है। इसलिए तुम हमें त्याग कर मर्यादाओ पर चलो—

इहि विधी वेद मारग सुनो।
कपट तजि पति करौ पूजा कहा तुम
जिय गुनौ॥

गोपियां व्याकुल हो जाती हैं। वे प्रेम की इस राह पर बहुत दूर तक चली आयी है वहाँ से लौटना असम्भव है। मरुस्थली पर पड़े चिह्नो के आधार पर पुनः उस मार्ग तक लौटना सहज कहाँ होता है। निशान तो मिट जाते हैं निराधार व्यक्ति का भटकना स्वाभाविक है। गोपियाँ अपनी कृष्ण के प्रति अनन्यता को स्पष्ट करने के लिए लोक मर्यादाओ का उसके स्तरो का अतिक्रमण करती है। कृष्ण को पति के रूप में स्वीकारते हुए अपना अधिकार जताती है कहती हैं जब आपको वेद, मर्यादा का इतना ध्यान था तो बांसुरी बजा कर हमें क्यो बुलाया है। अब तो आ गयी है सब कुछ त्याग कर। लोक मर्यादा वैसे भंग की है और आपने यदि अस्वीकार कर दिया तो हम अन्यत्र कहाँ जाएगी। मर्यादा की दुहाई दे कर आप प्रवंचक बन रहे है। हमें छल रहे हैं।

सूर का प्रेम अपने आप में अत्यधिक सशक्त है। प्रेम के मार्ग में मर्यादा, परम्परा, रूढि, मानापमान की कोई प्राचीर खड़ी नहीं की जा सकती है। मीरा का प्रेम गोपियो का आदर्श प्रेम है इसलिए उन्होने भी यह संघर्ष स्वीकार किया है। कबीर का प्रेम सामाजिक धरातल पर लोक मर्यादाओ को स्वीकार करते हुए राह बनाता है। गोपियो के इस अनन्य प्रेम का बीज श्रीमद् भागवत के रास-प्रसंग से पूर्व अंकुरित होता है और चिरन्तन रूप धारण कर वृक्ष के रूप में विशालकाय रूप धारण करता है। गोपियो की विजय निश्चित हो जाती है। वह कृष्ण के भीतर छिपे स्नेह बिन्दुओ को शब्दो में ढलता देखती हैं। उनकी ध्वनि सुनती है "सर्व धर्मान् परित्यजय मामेकं शरण व्रज"। गोपियां समर्पण करती बार बार हृदय की भावनाओ को कृष्ण तक पहुचाते हुए कहती हैं—

(क्रमशः)

Statement about ownership and other particulars about

SAPTHAGIRI
(MONTHLY)

FORM IV
(*See Rule* 8)

1	Place of publication	TIRUPATI
2	Periodicity of its publication	Monthly
3	Honorary Editor	Sri P V R K PRASAD, I A.S. Executive officer, T.T.D
4	Printer's Name (Whether citizen of India) Address	Sri M. Vijayakumar Reddy Yes Manager, T T.D Printing Press, Tirupati
5	Editor & Publisher's Name (Whether citizen of India) Address	K Subba Rao, M A, Yes Editor, T T D Sapthagiri Journal, Tirupati
6	Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital.	Tirumala Tirupati Devasthanams represented by its Executive Officer T T D Tirupati.

I, K Subba Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief

(*Sd.*) K. SUBBA RAO,
EDITOR & PUBLISHER,
Tirumala Tirupati Devasthanams, Tirupati

TIRUPATI,
Date · 26-2-1979.

श्री श्रीनिवाससेवा कैवल्यप्राप्तिः

१५. श्रीमन्नशैलशिखराग्रनिवास ! शौरे !
पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्तिन् !
विद्वद्विभाव्य ! विधुमण्डलमण्डिनाग्रे !
श्री श्रीनिवास ! ममदेहिकरावलम्बम् ॥

१६. श्री प्राणनाथ ! मधुकैटभदानवारे !
वैकुण्ठमाधव ! धराधरभृन्मुरारे ।
सर्वज्ञ ! सर्वसुजनावन ! दुर्जनारे !
श्री श्रीनिवास ! ममदेहि करावलम्बम् ॥

१७. वेदत्रयीविनुत ! विश्रुतदिव्यकीर्ते !
विश्वस्वरूप ! विविधाध्वरहव्यमूर्ते ।
लक्ष्मीमुखाब्जमधुलोलुपविष्णुमूर्ते !
श्री श्रीनिवास ! ममदेहि करावलम्बम् ॥

१८ कल्याणकार ! करुणाऽमृतपूर्णसिन्धो ।
कञ्जाक्ष ! कामजनकाच्युत लोकबन्धो
कामेश्वरी हृदय सारसस‌द्म बद्ध !
श्री श्रीनिवास ! ममदेहि करावलम्बम् ॥

१९. विघ्नाद्रिभेदशतधारधुरंधरन्ती
विद्याप्रदानगुरुपादभरं वहन्ती
उद्यद्विवस्वदरुणाभमघःकिरन्ती
श्री श्रीनिवास पदभूतिरघापहन्त्री ॥

२० चारुस्मिताभपरिशोभित वक्त्रबिम्बे
सौवर्णलितमणिभूषण भूषिताङ्गे
सौन्दर्यमोहितसमस्तजनान्तरङ्गे
धीर्स्सर्वदास्तु कमलामुखपद्मभृङ्गे ॥

२१. दृष्टःस्वप्ने परमपुरुषः कोप्यनिर्वाच्यरूपः
यस्योल्लासः सकलजगतामुद्भवस्यादिहेतुः
कर्तव्या तेऽविहितमनसः श्रीनिवासस्य सेवा
कैवल्याप्त्यैयिति निगदितः तेन चिन्तान कार्या ॥

२२. न निश्चेतुं शक्यः पशु पतिरयं पन्नगपतिः
स्मृतौ साक्षत्कृत्य प्रमुदितमनाः स्पष्टवयसा
वदन्नित्थ यातोहिहिरिहरवपुर्मे करतले
प्रसूनं निक्षिप्यान्तर्गतरितरभूसत्वरमहो ! ?

२३. पयोजनाभपादपद्मभव्यपांशुभूषिता
पयोरुहानानाकटाक्षवीक्षणप्रसादिता
विहङ्गराजवाहनप्रचण्ड विक्रमस्फुरत्
गरिष्टगारुतीगतिर्मेतिमिम प्रवर्धताम् ॥

२४. खगेश्वरेशसत्कृपाकटाक्षपात्रभूरह
रमाकृपावलोकनप्रशस्तवाग्विभूतिभाक्
समस्तदेवसादरप्रमोदपात्रभूरह
सदेहसुष्टुयापयेमदीयशिष्टजीवनम् ॥

२५. विहङ्गराजवाहनं विचित्रवेषधारिणं
विपक्षवर्गहारिण विपन्नलोकपायिनं
विमोहपाशखंडनं विशालधीःप्रसादिनं
विभावये विशेषतो विशुद्धमुक्तिदायिनम् ॥

२६. स्वप्नेयत्परिशोधन कृतमभूछ्त्री श्रीनिवास ! त्वया
तत्वत्सन्नुतिमालिकाविरचितश्लोकप्रसूनान्तरे
सम्यक्स्खलितमात्मबुद्धिवशतो यद्दादृगृहीतं मया
तन्मांपाहिभवत्कृपाशितभवं कारुण्यवारांनिहो ॥

२७. निर्देशात् श्रीनिवासस्य, नैजस्तवविलेखने
प्रवृत्तोरामरायाख्यो यामिजालकुलोद्भवः ॥

२८. भारध्वाज सगोत्र समुद्भव
रामनृसिम्हजमध्यमपुत्रः
श्री रामाख्यस्सुजनविधेयः
सस्कृतसनुति मेतां अतनोत् ॥

२९. पितारामनृसिम्हाख्यो
माताभेच महेश्वरी
नौमितावनिशंभक्त्या
जन्मसौभाग्यदायिनौ ॥

"समाप्तेय श्री श्रीनिवास सनुतिमाला
श्रीनिवाससेवा कैवल्यप्राप्तिनामिका
यामिजाल रामा राव विरचिता"

श्री या. रामाराव
साहित्य विद्याप्रवीणः

(पृष्ठ १६ का शेष)

भक्ति के तीन प्रकार है साधना भक्ति, भाव भक्ति एवं प्रेम-भक्ति। साधना भक्ति मन की भावनाओ से स्वाभाविक रूप में क्रमशः भाव भक्ति यानी साध्य भक्ति में परिणत हो जाती है। मानव हृदय के अंतस्थ चिरवस्तु प्रेम भक्ति साधना भक्ति को दर्शनीय रूप देती है। चैतन्य महाप्रभु के जीवन में शुद्ध प्रेम रूपा भक्ति परिप्लावित हुई थी।

श्री चैतन्य महाप्रभु विशुद्ध भक्ति के लिये ज्ञान तथा तत्व शास्त्र सबन्धी बाधक विचार, व्रतनियमो का पालन, पूजा की गतिविधि आदि को अनावश्यक समझते थे। भगवान ने नाम-जप और गुणगान या कीर्तन उनके अनुसार अतिसुलभ साधन है। वे भगवान के स्वरूप ज्ञान और परमात्मा से जीवात्माओ के संम्बंधो का ज्ञान भक्ति के लिये आवश्यक कहते थे। उनके अनु-सार, भक्ति के दो प्रकार है, वैधी भक्ति और रागानुगा भक्ति। वैधी भक्ति आध्यात्मिक विचारो के ज्ञान से और रागानुगा भक्ति पर-मात्मा के प्रति भक्त के हृदय मे गोचर होनेवाले स्वाभाविक प्रेम से उत्पन्न होती है। वे श्रीमद्-भागवत को सत्यान्वेषण के लिये अत्युपयुक्त धार्मिक ग्रन्थ मानते थे। क्यो कि वह उपनिषदो के सार ब्रह्मसूत्रो मे प्रतिपादित रहस्यो को निष्पक्षपात रूप से निरूपित करता है। श्रुति स्मृतियो से ब्रह्म के निजस्वरूप का पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। उनके विचार थे कि ब्रह्म प्राकृत गुणविहीन और अनन्त अप्राकृत गुणपूर्ण है। ब्रह्म शब्द का अर्थ बडा है अतः ब्रह्म के श्रेष्ठतम गुणो और जीवात्माओ के हेयगुणो मे किसी तरह का साम्य नही हो सकता। पर-मात्मा नियन्त्रक और विश्व स्रष्टा है। वे विश्व के व्यवस्थित तथा अव्यवस्थित दोनो प्रकार की वस्तुओ एव विषयो के प्रभु है। श्रुतियो में ब्रह्म इसलिये निर्गुण माने गये है कि उनके गुण, काल, देश एव कारणो के प्रभावो से परे है। परमात्मा और जीवात्मा स्पर्शमणि और उससे प्रभावित होनेवाले लोहे के सदृश है।

सोलहवीं शती से उत्तर भारत मे बृन्दावन, बंगाल और उड़ीसा वैष्णव भक्ति-साहित्य के केन्द्र बन गये। श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन और उपदेशो से प्रेरित होकर उपरोक्त स्थानो मे असख्य विद्वान धार्मिक ग्रन्थों के सहारे भक्ति के प्रसार मे व्यस्त हो जाते थे। तत्कालीन वग-राज्य के मत्री रूपगोस्वामी ही सैकडो ग्रथो की रचना करने और अन्यो से रचना करवाने में अग्रगण्य हुए थे। गोपालभट्ट नामक श्रीरगम् के निवासी साधु ने वहाँ से बृन्दावन जाकर बहुत काल तक असंख्य शास्त्र-ग्रन्थो का मथन करके श्री चैतन्य महाप्रभु के उपदेशो से उनका साम-जस्य करके गौडीय सप्रदाय के लिये उपयोगी बहुत से धार्मिक ग्रन्थो की रचना की थी। जीव-गोस्वामी कृत सत्सदर्भ गौडीय वैष्णवो का सर्व श्रेष्ठ वेदान्त-ग्रन्थ माना जाता है। बलदेव विद्याभूषण और विश्वनाथ चक्रवर्ती से गौडीय सप्रदाय के साहित्य के पुनरुत्थान मे अठारहवी शती में अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई थी।

उन्नीसवीं शती मे ठाकुर भक्तविनोद, महात्मा शिशिरकुमारघोष, राजर्षि वनमालीराय, महात्मा मुनीन्द्र चन्द्र नन्दी आदि से वैष्णव भक्ति साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। सन्त श्रीमत् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर ने श्री चैतन्य महाप्रभु के जन्म स्थान मायापुर मे एक विद्यालय की स्थापना की। वे श्री चैतन्य मठ के सस्थापक भी थे। उन्होने श्रीरगम् के श्री वैष्णव और उडुपी के मध्व वैष्णव विद्वानो को उपरोक्त विद्यालय मे नियुक्ति करके वैष्णव साहित्य और वेदान्त के अध्ययनो को वैज्ञानिक अध्ययन का रूप दिया। कलकत्ता के चैतन्य-शोध-संस्थान में वैष्णव भक्ति के अध्ययन के लिये प्रबध हुआ। सक्षेप मे, गौडीय वैष्णवो ने आचार्य रामानुज,

जीवन्मुक्त

पवित्र पुष्करिणि में
पावन स्नान के बाद
श्रीमन्नारायण को
बालाजी के रूप में
दर्शन के बाद
माँ लक्ष्मी को
पद्मावति के रूप में
नेत्रानद के बाद
तिरुमल – जो
श्रीवैकुन्ठ है
वहाँ रहने के बाद
गजानन, हनुमान,
गोविन्दराज आदि
देव, देवताओं को
जी – भरकर
आमने – सामने से
तिरुपति में
देखने के बाद
मै बुरा आदमी
हो नही सकता!
पाप मुझ में कहाँ?
मेरा शेष जीवन
परमेश्वर की इच्छा
के अनुसार ही होगा;
द्वन्द्वों से विमुक्त होकर
निर्विकार, निर्मम
और संयम से
माया मोह छोडकर
बन्धनों को काटकर
अब मै
इस जगन्नाटक में
केवल साक्षीभूत हूँ,
और
जीवन्मुक्त हूँ!
गोविन्द! गोविन्द!! गोविन्द!!!

श्री आर. रामकृष्णा राव,
भिलाई.

मध्व एव श्रीधरस्वामी के सिद्धान्तो के समन्वय से अपने सम्प्रदाय को सुसंस्कृत करके वैष्णव भक्ति के आदर्शों को अपनाया है।

समाज और साहित्य पर भक्ति एवं वैष्णव भक्ति का प्रभाव

सामाजिक और साहित्यक क्षेत्रो मे मन की प्रधानता होती है। मन ही मानवो के बन्धन और मोक्ष के कारण कहा जाता है। अन्य प्राणियो के जैसे मानव भी एकाकी रहना नही चाहता। समाज में पारस्परिक सहायता से जीवन सुखमय होता है। मनुष्यो का सहजीवन समाज के नियमो पर आधारित है। व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य घटित होनेवाले व्यवहारो को नियन्त्रित करने के लिये ही सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक नियमो की व्यवस्था प्राचीन काल से सभी मानव समुदाय आवश्यक समझने लगे। परिस्थितियो के अनुसार विभिन्न जन समुदायो की सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक व्यवस्थाओ में विविधता आ गई। विविधता मे एकता तथा सामजस्य स्थापित करना वैष्णव भक्ति से प्रभावित भारतीय सस्कृति की विशेषता है।

काल भैरवि, श्री कालहस्ति.

वेदोपनिषदो, पुराणो, धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत, आदि मे, ये भावनाएँ स्पष्ट तथा व्यक्त की गयी है। समय समय पर वे भारतीयों को सब तरह के सकटो से पार होने मे मार्ग दर्शक हुए। उन सब मे वैष्णव भक्ति के आदर्श प्रतिपादित है। साहित्य और समाज मे गहरा सम्बन्ध है। साहित्यकारो के वैयक्तिक जीवन पर समाज के आचार व्यवहारो का प्रभाव पडता है। तथैव साहित्यकारो की कृतियाँ उनके समाज के रूप बदलानेवाली होती है। प्राचीनकाल से भारत मे विभिन्न सस्कृतियो के लोग आये और भारतीयो के साथ मिलकर रहने लगे। किसी को भारतीय सस्कृति परकीय संस्कृति नही प्रतीत हुई क्यो कि उससे वेदोपनिषदो का ज्ञान, जैन-बौद्धो का अहिसावाद, यहुदी, ईसाई और मुसलमानो का एकदेवाराधन, आदिवासियो की पूजा-पद्धतियाँ, सब के लिये उचित स्थान है और सभी के आदर्श वैष्णव भक्ति पर आधारित भारतीय सस्कृति के भी आदर्श है, उन धर्मो में प्रतिपादित भगवत् प्रेम, सदाचार, पवित्र जीवन के अतिरिक्त परधर्म-सहिष्णुता, मानवता और समन्वय सभी भारतीय धार्मिक एव लौकिक ग्रन्थो के सन्देश प्रतीत होते है। वैष्णव भक्ति के प्रभावो से ज्ञान-प्रधान ऋग्वेद, कर्म प्रधान-यजुर्वेद, भक्ति प्रधान सामवेद और लौकिक सुखो के लिये विज्ञान-प्रधान अथर्ववेद का निर्माण हुआ। उनकी सहिताएं निर्मित की गयीं। वेदाध्ययन और रहस्यो की, जानकारी मे सहायक शिक्षा, व्याकरण, छन्दस्, निरुक्त, ज्योतिष्य कला और शास्त्रो की रचना की गई। विचार-विमर्श के ही स्वातंत्र से शताधिक उपनिषदो षड् दर्शन, धर्म, श्रौत, गृह्य, कल्प, शुल्ब, शिल्प आदि विषयो पर बहुत से ग्रन्थ रचे गये। याज्ञवल्क्य, नारद, पराशर, बृहस्पति, कात्यायन, विष्णु, वसिष्ठ, शख आदि की स्मृतियाँ आविर्भूत हो सकीं। ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थो पुराणो और उपपुराणो की रचना हो सकी। आध्यात्मिक विषयो के अलावा पुराणो और उपपुराणो मे इतिहास, न्याय, राजनैतिक शास्त्र, वैद्य, सगीत, नृत्य, वास्तुशिल्प अलकार आदि के साथ चौसठ कलाओ का विश्वकोश प्रस्तुत किया गया। पद्मपुराण के अनुसार पुराण श्रीहरि का ही रूप है और अठारहो पुराण उनके अग है। वैष्णव भक्ति की सहिष्णुता ही भारत में इतने विस्तृत साहित्य के निर्माण का आधार कहा जा सकता है। वैष्णव भक्ति की उदारता के अभाव में भारत को छोडकर अन्य किसी देश में कोई प्राचीन ग्रन्थ नहीं रह सका। कोई पुरातन कलाकृति बच न सकी।

उपरोक्त प्राचीन साहित्य-ग्रन्थो के अतिरिक्त, भारत के सभी महाकाव्य वैष्णव भक्ति से ही आविर्भूत हो सके। आदिकवि वाल्मीकि और व्यास महर्षि प्रणित महाभारत में प्रतिपादित विषय वैष्णव भक्ति ही है। रामायण और भगवद्गीता शरणागति या प्रपत्ति के महत्वो के प्रतिपादिक ग्रन्थरत्न है। रामायण और महाभारत के आधार पर ही रघुवश, कुमार सभव, शिशुपालवध तथा किरातार्जुनीय नामक सस्कृत के पचमहाकाव्य रचे गये है। पुराणो के ही सदृश महाकाव्यो मे भी ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर एक ही परमात्मा के विभिन्न रूप माने गये है। शैव और वैष्णव पुराणो की देखा देखी जैन और बौद्ध धर्मानुयायी भी जैन पुराण और जातक कथाओ की रचना करने लगे।

कतिपय विद्वानो की धारणा है कि रामायण की कथा ऋग्वेद के दशम मण्डल के आख्यान पर आधारित है। महाभारत के वनपर्व, बौद्धो के जातको जैन पुराणो, रामतापिनी उपनिषद्, ब्रह्माण्डपुराण का अध्यात्म रामायण, पद्म पुराण, भागवत आदि में ही नही, बृहद् भारत की सभी भाषाओ मे रामायण की कथा जाती है। रामायण-कथा की जनप्रियता से सामाजिक नियमो के मौलिक गुण लोगो के लिये आदर्श हुए। उन से मातृ भक्ति, पितृ भक्ति, राज भक्ति, भ्रातृ-वात्सल्य और पति भक्ति लोक कल्याण के लिये प्रधान कर्तव्य हुईं। महाभारत ऋष्याश्रमो की नीति बोधक उपकथाएँ, अनेक आख्यान और उपाख्यान, स्थल पुराण, दर्शन नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र धर्मशास्त्र, राजनीति शास्त्र, विभिन्न देवताओ की स्तुतियाँ आदि से भरपूर है। कर्म, ज्ञान, भक्ति, प्रपत्ति, साख्यायोग, हठ-योग, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत प्राणवाद के सिद्धान्तो का आधार ग्रन्थ मानी जानेवालो भगवद्गीता भी महाभारत का एक अश है। पहले अध्याय में ही बताया गया है कि रामायण, महाभारत, वेद आदि में आदि से अन्त तक वैष्णव भक्ति का ही प्रतिपादन है और उन में प्रतिपादित समस्त ज्ञान वैष्णव भक्ति पर ही आधारित प्रधान तत्व विविधता में एकता स्थापित करना है। स्व० पण्डित जवाहरलाल जी ने लिखा है कि रामायण और महाभारत के समान जनसाधारण के मनोराज्य पर सतत और व्यापक प्रभावोत्पादक ग्रन्थ अन्य नहीं है और वे पुरातन काल से भारतीयो के जीवन में नये चैतन्य और स्फूर्ति करने आ रहे है। ★

श्री वेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मंदिर, तिरुमल.
अर्जित सेवाओं की दरें

विशेष दर्शन रु. 25—00

सूचना — एक टिकट के द्वारा एक ही दर्शनार्थी भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकेगा ।

I **सेवाएं :—**

१ अमत्रणात्सव	रु 200	७ जाफरा बरतन (Vessel)	रु 100
२ पूलगि	60	८ सहस्रकलशाभिषेक	2500
३ पूरा अभिषेक	450	९ अभिषेक कोइल आलवार	1745
४ कर्पूर बरतन (Vessel)	250	१० तिरुप्पाबडा	5000
५ पुनगु तेल का बरतन (Vessel)	100	११ पवित्रोत्सव	, 1500
६ कस्तूरि बरतन (Vessel)	100		

सूचना – सेवासख्या१ — इस सेवा में छे व्यक्ति ही दर्शन प्राप्त कर सकेगें । जिस दिन प्रात काल तोमाल सेवा और अर्चना की है केवल उसी दिन रात में एकान्तसेवा के लिए भी भक्त दर्शनार्थ जा सकते हैं ।

सेवा क्रमसख्या २–यह सेवा केवल गुरुवार की रात को मनायी जाती है । केवल 2 व्यक्ति ही दर्शन पाप्त कर सकेंगे ।

सेवा क्रमसंख्या ३–७ — केवल शुक्रवार को मनायी जाती है । इन सेवाओ के लिए प्रवेश इस प्रकार होगा —

क्रमसख्या ३ – गिन्ने के साथ केवल २ व्यक्ति ।
४ – गिन्ने के साथ केवल २ व्यक्ति ।
५ – ७ – गिन्ने के साथ केवल एक व्यक्ति ।

सेवा क्रमसख्या ८ – १० – प्रत्येक सेवा सम्पूर्ण दिन का उत्सव है । सेवा करानेवाले भक्त को प्रसाद दिया जायगा, जिस मे बडा, लड्डू, पापड, दोसा इत्यादि होग । इस के अतिरिक्त सेवा न. ८ के लिए वस्त्र भी भेंट के रूप मे दिया जायगा । सहस्र कलशाभिषेक, तिरुप्पाबडा तथा पवित्रोत्सव सेवाओ में हर एक सेवा को १० व्यक्ति जा सकते हैं ।

साधारण सूचना –रिवाजो के अनुसार दातम (Datham) और आरती के लिये एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना पडेगा ।

II **उत्सव —**

१. वसन्तोत्सव	रु 2500	४. प्लवोत्सव	रु 1500
२. कल्याणोत्सव	1000	५. ऊँजल सेवा	1000
३ ब्रह्मोत्सव	. 750		

सूचना :– १ वसन्तोत्सव :– जो भक्त वसन्तोत्सव मनाना चाहते है उनकी सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार यह उत्सव तीन दिन अथवा उससे कम दिनो मे मनाया जायगा और उन्हे वस्त्र पुरस्कार मिलेगा ।

२ ब्रह्मोत्सव :– इस उत्सव को जो यात्री मनाना चाहते है अपने साथ ६ साथियो को ला सकते है, तथा तामालसेवा, अर्चना और रात को एकान्तसेवा मे भाग ले सकते है। यह उत्सव तीन दिन तक अथवा उससे कम दिनो मे यात्री की सुविधा के अनुसार और मदिर की सुविधा के अनुसार मनाया जायगा । उत्सव के दिनो में उस के मनानेवाले को पोगल और दोसा इत्यादि प्रसाद भी दिये जायेगे । उत्सव के अन्त मे वस्त्र पुरस्कार दिया जायगा ।

३ कल्याणोत्सव या श्रीस्वामीजी के विवाहोत्सव के अन्त मे वस्त्र पुरस्कार और लड्डू, बडा, पापड, दोसा आदि नियमानुसार प्रसाद के साथ दिये जायेगे ।

III. वाहन सेवाएँ :–

१ वाहन सेवा सर्वभूपाल वज्रकवच सहित ७२+१ (आरती)	रु	73
२ वज्रकवचसहित वाहनसेवा स्वर्ण गरुडवाहन, कल्पवृक्ष, बडा शेषवाहन, सर्वभूपाल, सूर्यप्रभा, प्रत्येक ६२+१ (आरती)	.	63
३ चाँदी गरुडवाहन, चन्द्रप्रभा, गज (हाथी) वाहन, अश्ववाहन, सिंहवाहन, हसवाहन, प्रत्येक ३२+१ (आरती)	..	33

सूचना :– वाहनसेवा मनानेवाले गृहस्थ को प्रसाद में एक बडा दिया जायगा ।

साधारण सूचना :– न ३ और ४ के लिये दातम और आरती के लिये समय और रिवाजानुसार एक एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना होगा ।

IV भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण (१/४ सोला) :–

१ दहीभात	रु	40	४ शक्करपोगलि	रु	65	७ शक्करभात	रु	85
२ बघार भात		50	५ केसरीभात	..	90	८ शीरा	...	155
३ पोगलि(घी और मिर्चभात)		55	६ पायसम (खीर)	...	85			

सूचना :—भोग के बाद प्रसाद भक्त को दिये जायेंगे। भोग के बाद अपने प्रसादो को भक्त लोग आकर अपने बर्तन मे स्वीकार करेगें ।

V पक्वान्नो की भेंट :—

१. लड्डू	रु.	450	४ दोसे	रु	100	७ सुखी	रु	200
२ बडा	.	250	५ पापड	..	230	८ जिलेबी	..	450
३. पोली		225	६ तेनतोल	...	200			

सूचना —जो गृहस्थ उपर्युक्त पक्वानो को भेंट देत है उन्हे भोग के बाद ३० पनियारम दिये जायेंगे। प्रसाद-पन्यारम को गृहस्थ स्वय आकर मन्दिर से ले जा सकते है । भोग के बाद मन्दिर की दूसरी घटी बजते ही प्रसाद पन्यारम दिया जायगा ।

VI नित्य सेवाएँ :—

१ नित्य कर्पूर हारती रु. 21   २ नित्य नवनीत आरती रु. 42   ३ नित्य अर्चना रु 42

सूचना :—नित्य सेवाओ के लिये प्रथम वर्ष मे अतिरिक्त रूप से देय शुल्क वर्ष के पहले हर एक सेवा के लिए अग्रिम के रूप मे देना पडेगा । जो भक्त इन नित्य सेवाओ को मनाते है उनको भगवान के दर्शन केलिए प्रवेश नही मिलेगा । भक्तो की अनुपस्थिति मे ही उनके नाम पर इन सेवाओ को सपन्न किया जायगा ।

———

बिनु गुरु होइ कि ज्ञान

नामदेव

एक दिन की बात है कि नामदेव, ज्ञान देवादि सतो की भेट के लिए आलदी गए। विठल-प्रेम की मूर्ति नामदेव को अपने घर आया हुआ देखकर निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव और सोपान ने उनका गौरव करने के लिए साष्टाग नमस्कार किया। परन्तु नामदेव ने यह सोच कर कि मै तो ब्रह्म के सान्निध्य मे हूँ मै इन से आयु मे बडा हूँ, भगवान का परम भक्त हूँ, विठल अपने से बोलते है, अपने हाथ से दूध पीते है उन संतो को नमस्कार नही किया।

नामदेव का अज्ञान मूलक अभिमान देख कर मुक्ता बाई सतप्त हुई। उसने नामदेव से कहा—

आश्चर्य है कि जिसे ईश्वर का आनद सान्निध्य प्राप्त हो फिर भी उसका अहकार बना रहे। नामदेव! तुम मान अभिमान और मत्सर मे चूर हो। तुम्हारा यह आचरण उस मूर्ख के समान है जो दिन मे दीपक से देखने का प्रयत्न करता है। तुम नित्य परब्रह्म के साथ विचरते हो, तुम्हारे नेत्र अन्धे क्यो है? पडरीनाथ रूपी कल्प-वृक्ष की छाया मे बैठकर सभी अभीष्ट पदार्थो की प्राप्ति सुलभ है, परन्तु तुम्हारे हाथ

* श्री जगमोहन चतुर्वेदी.
हैदराबाद

मे अब भी खप्पर ही दिखाई देता है घर काम मे धेनु है और तुम दूसरे के यहाँ जाकर छाँछ माँगते हो! ससार मे ऐसा कौन मूर्ख है? ऐसे अभिमानी भक्त के दर्शन और सग से क्या लाभ?

मुक्ता बाई ने नामदेव को उद्बुद्ध करने के लिए उनके सब दोषो का मूलकारण उन्हे बताया।

नामदेव! तू अपने को हरि-भक्त कहता है, मजीरा और तानपूरा लेकर हरि-कथा कहता है, परन्तु तू भक्ति के रहस्य से अनभिज्ञ है। तू गुरु पुत्र नही बना। बिना गुरु की कृपा के तुझे मोक्ष नही मिल सकती क्यो कि तुझे सच्चा आत्म-ज्ञान प्राप्त नही हुआ है। तू कोरा है। तू ने अपने स्वरूप को नही पहचाना, अहकार को पकड रखा है। तू आत्मनिष्ठ बन तभी तू ज्ञानी बनने का अधिकारी बन सकेगा। तू ज्ञानी बनने की डीग मारता है। जिसे सतो का सम्मान करना नही मालूम उसने भगवान के सान्निध्य मे रह कर क्या सीखा? तू ने पारस

को फेक कर हाथ मे पत्थर उठा लिया है। तेरा अतर शुद्ध नही। तू अपने को पढरी का भूषण बताता है, परन्तु मन मे तिल भर बोध नही। योग साधन करने वाला चागदेव बारह सौ वर्ष तक जिस प्रकार कोरा रहा उसी प्रकार तू कोरा है। जब चागदेव अलकापुरी मे ज्ञान देव की शरण मे आया तब उसे सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ। तू भी गुरु की शरण मे जा तो सच्चा ज्ञान तुझे भी प्राप्त होगा?

मुक्ताबाई के स्पष्ट और उद्बोधक शब्दो को सुन कर नामदेव की आँखे खुली। वे समझ गए कि भक्ति का डका पीट कर उन्होने केवल अहकार को ही बढाया, परन्तु वास्तव मे वे ज्ञान शून्य ही रहे। निष्टत्ति और ज्ञानदेव के मन मे यह धारणा थी कि अहकार रूपी सर्प को नामदेव रूपी वृक्ष से लिपटा रहने दिया जाए। उनकी भावना थी कि जब सत नामदेव ने विठल को अपना बना लिया है तो उनके सम्मान मे कोई त्रुटि न होनी चाहिए परन्तु मुक्ताबाई चुप न रह सकी।

उसने सतों से कहा:—

"यह नामदेव विठोबा का लाडला है। उनसे सदा झगडता रहता है। अतः विट्ठल ने उसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए तुम्हारे पास भेजा है। यह घट कच्चा है या पक्का इसकी परीक्षा गोरोबा करेंगे और उनके निर्णय को हम सत्य मानेंगे। यदि घट कच्चा हुआ तो उसे अग्नि मे तपाकर पक्का किया जाए। यह तुम्हारा कर्तव्य है जिसे सत्य प्रमाणित करो।"

मुक्ता बाई ने फिर कहा·— "नामदेव को प्रणाम कर अव्यक्त निर्गुण की शरण मे भेजो। उसे केवल व्यक्त सगुण का ही ज्ञान है। उसे निर्गुण का बोध कराना आवश्यक है।"

गोरोबा ने मुक्ताबाई का अभिप्राय समझ लिया और थापी लेकर घट की परीक्षा करने के लिए आगे बढे। मुक्ताबाई की न्याय निष्ठुर वाणी सुनकर नामदेव को अत्यन्त दुःख और मनः क्लेश हुआ।

उस समय महान् साक्षात्कारी ज्ञानेश्वर ने साक्षात्कार के अनुभवो को वणन करने वाले कुछ अभग सुनाए जिनका भावार्थ यह है

"आकाश में ऐसा तेज दिखाई दिया मानो मोतियो का चूर्ण फेका गया है अथवा बिजली के

कौंदने के समान प्रकाश हुआ किंवा आकाश को जरी के अनेक रग के पीताम्बर पहनाए गए हो। नीलबिंदु, [ज्ञानेश्वर ने यहाँ 'बिंदुले' शब्द का उपयोग किया है। यह एक आध्यात्मिक सत्य तत्त्व है। उस परमार्थ तत्त्व को गुरुदेव श. द रानडे ने 'स्पिरिटॉन' [Spiriton] का नाम दिया है। जिस तरह 'प्रोटॉन, एलेक्ट्रॉन, न्यूट्रॉन पदार्थ के सूक्ष्म ज्ञान के समझने मे सहायक है उसी प्रकार बिंदुले आत्मानुभव का मूल बीज है] नीचे से ऊपर तक फैला हुआ शून्याकार बिंदु का भी दर्शन हुआ। सर्प के बच्चे नाचते हुए दिखाई दिए।"

बिजली कडकडा कर जिस प्रकार गुप्त हो जाती है उसी प्रकार मुक्ताबाई की गोरोबा से भेट हुई। इन दोनो की भेट मानो जीवात्मा ने किया हुआ विश्व व्यापक परमात्मा का अनुभव है।

उसके बाद दड चक्र [आध्यात्मिक चक्र] इत्यादि आत्मानुभव का निर्देश का निवृत्ति नाम ने स्पष्ट कह दिया कि ऐसे अनुभवो की गुफा मे साक्षात्कारी सत अखड आनन्द की समाधि भोगते है, परन्तु नामदेव ने इस गुफा मे प्रवेश नही किया। उसे साक्षात्कार नही हुआ है अत मुझे भारी दु ख है।

निवृत्ति नाथ ने रक्त, श्वेत, पीत, नील वर्ण, नक्षत्र, प्रकाश तथा ज्योति और विश्वव्यापी दीप-इन अनुभवो का वर्णन किया। यह भी कहा कि इन अनुभवो मे अंतर्बाह्य विश्व एक-रूपता को प्राप्त होती है।

आत्मानुभव के अमृत-बोल सुनकर साक्षात्कारी सत आनदभोर हो गए। वे आनन्द से झूमने लगे परन्तु नामदेव आश्चर्य चकित हो गए। जिसे साक्षात्कार का अनुभव नही उसे उपर्युक्त वचनो का अर्थ क्या समझ मे आए तथा सतो के आनन्द के मर्म को वे क्या समझे? नामदेव की इस हत-वृद्धि अवस्था मे गोरोबा थापी मार-मार कर घटो की परीक्षा करने लगे। उसने निवृत्ति, ज्ञानदेव, सोपान, मुक्ताबाई के मस्तको पर थापी मारी, परन्तु देहातीत इन सतो ने चूँ तक न दी। गोरोबा ने निर्णय दिया कि ये सब घट पक्के है, लेशमात्र भी कोरे नही। इसके बाद नामदेव की बारी आई। गोरोबा ने उसके मस्तक पर थापी मारी, वे देहातीत न हुए थे इसलिए वे इस दु ख को सहन न कर सके। वे आँखे भीज कर रोने लगे। गोरोबा ने निर्णय दिया कि नामदेव बिलकुल कोरा है

सत सभा ने गोरोबा के निर्णय का अनुमोदन किया कि नामदेव अज्ञानी है। उसे आत्म-साक्षात्कार नही हुआ। नामदेव को इस बात का पश्चात्ताप था कि वे इन सतो से मिलने केलिए वृथा आलंदी आए। उनके मन मे यह धारणा थी कि वे बडे भक्त है और ये सत उनका सम्मान करेगे। प्रथम निवृत्ति नाथ आदि सतो ने उनको नमस्कार कर उनका आदर किया भी था। परन्तु सतो को इस कच्चे घट को तपा कर पक्का करना था।

नामदेव की आध्यात्मिक शक्ति सुषुप्त अवस्था में पडी थी। घट को तपाए बिना यह जाग्रत न हो सकती थी अत उन्हो ने ये सब बाते इसलिए की कि इस आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग जगदोद्धार के लिए किया जा सके। अज्ञान व अभिमान रोगो को दूर करने केलिए लासा लगाकर फँसाने, दग्ध करने आदि कठोर उपायो की योजना करनी पड़ती है। इन सतो ने ऐसा ही किया।

नामदेव ने अपमान, निराशा, भीति, अज्ञान, भ्रान्ति, असहायता इत्यादि भावनाओ से त्रस्त होकर दिल खोल कर सतो की निन्दा की।

वे कहते हैं:—

"सत समागम मुझे अच्छा फला! मुझे सम्मान का महा लाभ हुआ! मुक्ताबाई ने मेरे मस्तक को थापी से फुडबाकर मेरा अच्छा आतिथ्य किया। तुम्हारा सन्तपन मुझे अच्छी तरह अवगत हुआ। मुझे यह न मालूम था कि यह 'सत मडली' वास्तव मे 'दुष्ट मंडली' है। यदि यह जानता तो इनके पास कभी न आता। देखने मे ही ये भले दिखाई देते है।"

नामदेव अब अत्यन्त उद्विग्न हो गए थे और वहाँ से यह सोच कर भाग निकले कि ऐसा न हो कि यह सत मडली उन्हे तपा कर भून डाले उन्हे भागता हुआ देखकर सत मडली हँसने लगी।

मुक्ताबाई ने कहा:—

ब्रह्मरूपी अग्नि पर जड-चेतन विश्व का जो कचरा ढका हुआ है उसे सोऽहं अहं रूपी फुंकनी से दूर कर अतर्बाह्य ज्ञानाग्नि प्रज्वलित कर हम सब उसी निरालम्ब अवस्था मे रह जाएगे। यदि नामदेव को जीवदशा दूर कर शिवत्व का प्रत्यय मिले तो वह पाडुरंग का भी अधिक प्रिय हो जाएगा।

मुक्ताबाई कहती है नामदेव भाग रहा है। उस का आसन स्थिर नही है।

मुक्ताबाई के अतर मे मार्दव और दया है, परन्तु बाहर से वज्र से भी अधिक कठोरता

कुलिशहु चाहि कठोर अति.
कुसुमहु कोमल चाहि।"

सब दोषो का नाश करना-यह गुरु और सतो का कार्य है। इसके लिए शिष्य की देह और मन को दड देना-यह कटु कर्तव्य भी उन्हे करना पडता है, परन्तु वास्तव मे वे साधक की माता और भक्त के घर की दुधारू कामदेनु है। ✡

पोइगै आळवार, तिरुपति
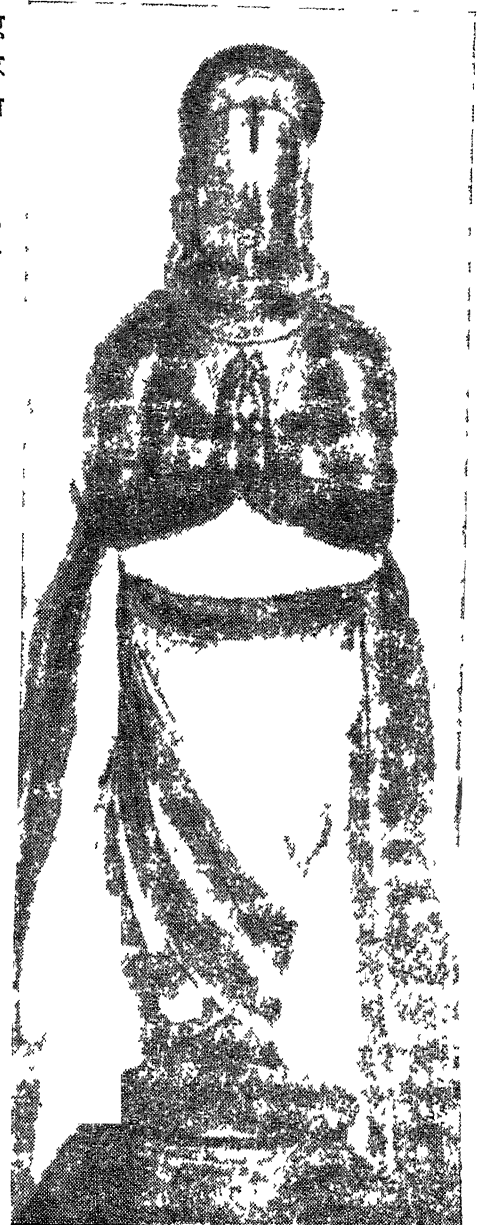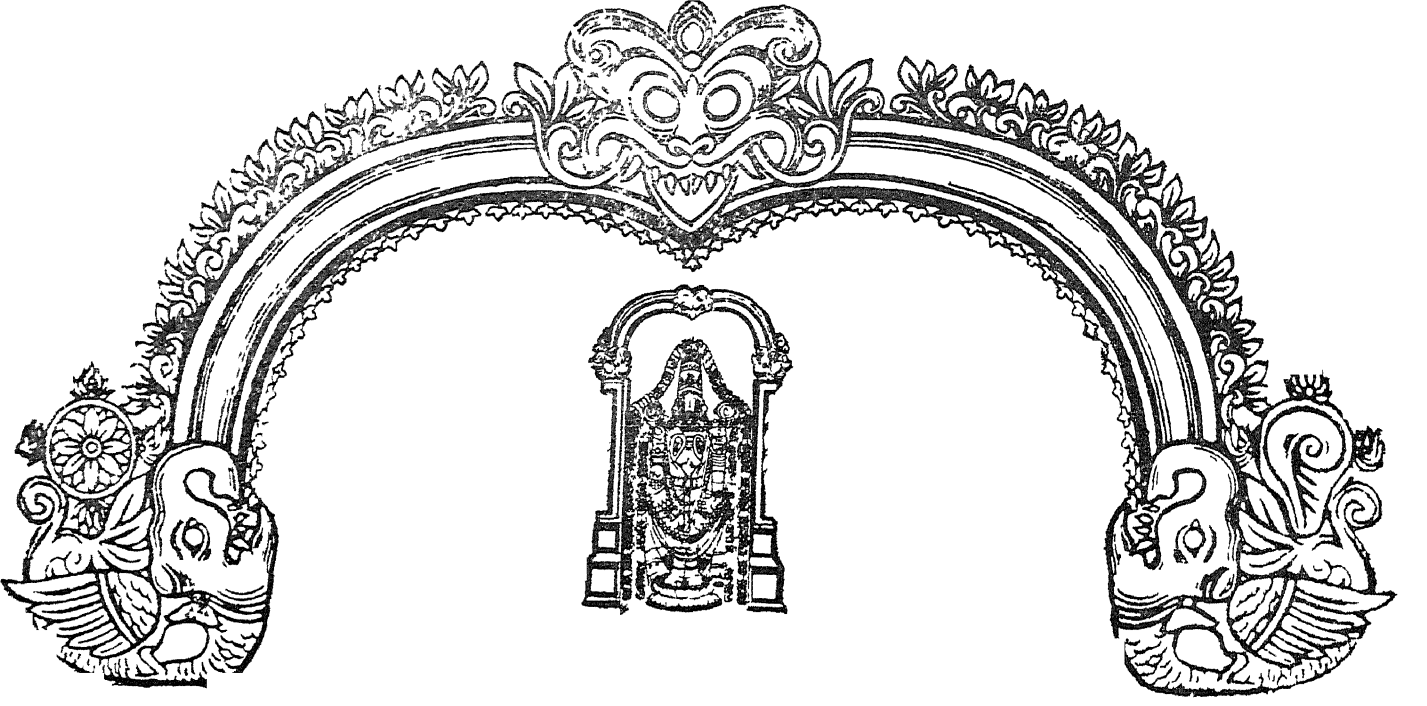
तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएँ

भगवान बालाजी के दर्शन

ति. ति देवस्थान को यह विदित हुआ कि कुछ धोखेबाज व्यक्ति यात्रियों से पैसे लेकर भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने का वादा कर रहे हैं

देवस्थान यात्रियों को विदित कराना चाहता है कि जहाँ तक सभव हो एक संयत एवं क्रम पद्धति में भगवान बालाजी के दर्शन कराने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। प्रतिदिन दस हजार से अधिक यात्री भगवान बालाजी का दर्शन करने आते हैं और दर्शन की सुविधा केलिए दिन में १४ घंटे का समय मंदिर का द्वार खोल दिया जाता है जिस में ११ घटे सर्वदर्शन केलिए नियत है। यदि यात्रियों की भीड अधिक हो तो क्लोजड षेड्स से और अधिक न हो तो सुरक्षित महाद्वार से दर्शन का प्रबंध किया जा रहा है।

वे यात्री जो समय के अभाव, अस्वस्थता अथवा अन्य किसी कारणवश क्यू में खडे नही सकते वे प्रति व्यक्ति रु. २५/- मूल्य का टिकट खरीद कर मंदिर के अन्दर ही ध्वजस्तंभ के पास से क्यू में शामिल हो सकते हैं जिस से कि उन को ५ मिनट के अन्दर ही भगवान के दर्शन प्राप्त हो सके।

यात्रियों से ति. ति. देवस्थान का निवेदन है कि वे बाहरी व्यक्तियों की सहायता से दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न न करे। शीघ्र दर्शन की सुविधा केलिए ति. ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबंध किये गये हैं, कोई कभी व्यक्ति भगवान का दर्शन उससे शीघ्रतर रवाने में असमर्थ है। अतः कृपया यात्रीगण ऐसे धोखेबाजों की झूठे वायदों से हमेशा सतर्क रहें।

भगवान के दर्शन प्राप्त करने में जो विलंब और प्रतीक्षा करने से जिस सहनशीलता का अभ्यास होता है, वह तो कलियुगवरद श्री वेंकटेश्वर के दर्शन प्राप्त करने केलिए अपेक्षित ही है और वह एक प्रकार की तपः साधना भी है जिस के द्वारा भगवान का सपूर्ण अनुग्रह प्राप्त होता है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति ति. देवस्थान. तिरुपति.

(पृष्ठ ७ का शेष)

भावना लिये लडते-झगडते क्यों रहें? क्यों नहीं हम पूरे अमन-चैन से देश की आम खुशहाली के लिये काम करते हुए रहें?

क्या गोमांस ऐसा कुछ है कि जिसके खाये बिना वे जीवित नहीं रह सकते? इसका उत्तर यही मिलेगा कि गोमांस ऐसा कुछ भी नही जिसके खाये बिना जीवित नहीं रहा जा सकता। हाँ यह एक अलग बात है कि जिन्हें इसे खाने की आदत पड गयी है उन्हें थोडे समय के लिये असुविधा हो सकती है। इसके लिये उपाय यह है गोहत्या धीरे-धीरे बन्द की जाए एक ही दिन में नहीं।

अब हमारी इस अपील के उत्तर में मुसलमान भाई यह कह सकते हैं कि जैसे हिन्दूओं का धार्मिक दृष्टिकोण कहता है कि गोहत्या बन्द होनी चाहिए ठीक उसी प्रकार मुसलमानों का भी धार्मिक दृष्टिकोण कहता है कि गोहत्या होनी चाहिए और गोमांस का भक्षण किया जाना चाहिए तो हम मुसलमान भाइयों के इस दलील के उत्तर में यही कहेंगे कि विश्व के सभी धर्म मानव प्रेम और जीव प्रेम की शिक्षा देते हैं। सभी धर्म यह सिखाते हैं कि जो निर्दोष एव निरीह हैं उनका रक्षण करो न कि भक्षण। फिर इस्लाम धर्म इसका अपवाद कैसे हो सकता है।

एक बार बातचीत के दर्मियान एक मुसलमान भाई ने मुसलमान की परिभाषा करते हुए बताया था कि मुसल्लम हो ईमान जिसका और मोम सा दिल हो जिसका वही सच्चा मुसलमान है। मुझे भी यही बात ठीक जंचती है कि जो मुसलमान ईमानदार और दयालु है वही सच्चा मुसलमान है। हमने पैगम्बर साहब की दयालुता के सम्बन्ध में एक छोटी सी कहानी कहीं पढी थी :—

एकबार की बात है कि पैगम्बर साहब की नमाज पढ़ने वाली चटाई पर एक चुहिया ने जाडे की रात में कई बच्चों को जन्म दे दिया। सुबह में नमाज पढने के लिये जब वे चटाई को उठाने लगे तब वह दृश्य देखकर उनका दिल दया एवं करूणा से भर गया। प्रसव वेदना से व्यथित चुहिया की अव्यक्त व्यथा को और उसके निरीह बच्चों की तात्कालिक आवश्यकता को देखा समझकर उन्होने उस चटाई को वहाँ वैसे ही पडे रहने दिया जबतक कि वे बच्चे बडे होकर स्वयं ही माँ के साथ इधर-उधर नहीं भाग गये। उन्होने दूसरी चटाई पर नमाज पढी। ऐसे दयालु थे पैगम्बर साहब। जीवों पर दया की नसीहत उनके जीवन से सिर्फ मुसलमानों को ही नही अपितु सबों को लेनी चाहिए। इस उदाहरण से मुसलमान भाई खुद ही सोच सकते हैं कि गोहत्या करना कभी भी धर्मसगत नही हो सकता।

हिन्दू और मुसलमान दोनों के बीच प्रेम-भाव एव मेल जोल बढाने के लिये आजीवन सघर्ष करने वाले कबीर ने एक स्थल पर ठीक ही तो लिखा है —

"दिन में रोजा रखत हैं, रात हनत हैं गाय। यह तो नहीं है बन्दगी, कैसे खुश हो खुदाय॥"

कोई भी धर्म क्यों न हो यदि वह निरीह प्राणियों की हिंसा की वकालत करता है तो उसे सच्चा धर्म नहीं कहा जा सकता। उस धर्म के माननेवालों को उसमें अपेक्षित सशोधन अवश्य करना चाहिए। फिर मुसलमान, क्रिश्चन आदि भाइयों को सोचना चाहिए कि हिन्दुस्थान में बहुसख्याक हिन्दूओं की कोमल भावनाओं को गोहत्या करके ठेस पहुँचाते हुए और आपस में द्वेष करते हुए जीना अच्छा है या गोहत्या न करके, गोहत्या करने वालों को रोक करके और हिन्दुओ की भावनाओ का आदर करके देश की आम खुशहाली के लिये एक साथ काम करते हुए जीना अच्छा है। हम तो समझते हैं कि वे दूसरे को ही अच्छा समझेंगे। *

दक्षिण के देवदाय कमिशनरों के समावेश में भाषण देते हुए आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री डा० एम, चेन्नारेड्डी

रामायुध अंकितगृह

भवन एक पुनी दीख सुहावा ।
हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥
रामनाम अंकित गृह सोहा ।
बरनि न जाई देखी मन मोहा ॥

गोस्वामीजी कहते हैं कि रावण के महल में भी हनुमानजी ने सीताजी को नही देखें, तब वे विचार में पडगये कि सीताजी कहां होंगें।

जब उन्होंने सामने नजर करके देखा तो उन्हे एक सुन्दर भवन दिखाई दिया। उन्होंने विचार किया कि शायद इसमें सीता-जी हों। अथवा मुझे सीताजी का पता यहा से मिल सकेगा। ऐसा उन्हें विश्वास हुआ। वे उस तरफ वेग से चल पडे।

विभीषणजी के भवन की रचना प्रभु निर्मित थी। उस महल में एक अलग मंदिर बना था। उसके द्वार पर "राम मंदिर रामालय" अंकित था। वास्तव में राम मंदिर रामालय था।

हनुमानजी इस विषय में इस प्रकार से कहते हैं।

रामायुध अंकित गृह शोभा बरनी न जाई।
नव तुलसी का बृंद तह देखी हरष कपि-राई॥

"रामायुध अंकितगृह" ईसे गोस्वामीजी ने यहाँ स्वरूप देकर कहा है कि रामचन्द्रजी सीताजी, लक्ष्मणजी, भरतजी और शतृघ्नजी तथा हनुमानजी सहित सभी के गुणस्वभाव और चरित्र से अंकित ऐसी श्री रामचन्द्रजी की भक्ति सारे आवास में गूंज रही थी।

इससे उस घर की परम शोभा देखकर कपिराज हनुमानजी कहते हैं कि वहां की शोभा अवर्णनीय थी।

नव तुलसी का बृन्द तहँ, देखी हरष कपिराई।

गोस्वामीजी के आगे श्री हनुमानजी इस प्रकार वर्णन करते है कि राम राम की ध्वनि

श्री शंकरलाल छगनलाल चोकसी, कवाँट.

से आवास के जड चेतन सभी पदार्थ रण-कार दे रहे थे। अर्थात रामचन्द्रजी की भक्ति वहा सर्वत्र व्याप्त थी।

"नव तुलसी का बृंद तहां" स्वामीजी के इस चौपाई को यहां स्वरूप देकर कहा हैं अर्थात नम नाम, नवीन तुलसी का नाम भक्ति का वृंद नाम समूह वहां सर्वत्र हनुमान जी ने देखा। इसे देखकर कपिराज हनुमान जी को बहुत ही आनन्द हुआ।

तुलसी श्री प्रभु को अत्यन्त प्रिय है। इस से इसका स्वरूप भक्ति है। वहां नव भक्ति का समूह उन्हें सभी स्थानों पर दिखाई दिया। इसे देख कपिराज हर्षित होकर वहां डोलने लगे। विभीषणजी की भक्ति देखकर प्रशसा करने लगे।

"रामायुध अंकित गृह" वह स्थान प्रभु श्रीराम के वसवाट से अंकित हों उसका वर्णन कौन कर सकता है। इससे विभीषण के आवास में कोई भी स्थान ऐसा खाली नही था। जहां रामायुध न हो, आशय कि राम भक्ति बिना कोई स्थान खाली नहीं था।

रामायुध शब्द रामजी का युध नाम से जुडा हैं। इससे सबंधित होकर पूरा आवास शोभायमान हो रहा था। और उसमें नौ भक्ति का समूह दिखाई दे रहा था। कपि-राज हनुमान जी को यह अद्भुत भक्ति जो नवीनतम थी देखकर बहुत आनन्द हुआ।

गोस्वामीजी कहते हैं कि प्रभु श्रीराम ने अनन्य भक्ति की बात हनुमान जी को कही थी वह ताद्रस्य रूप में उन्हें देखने को मिली। इसे देखकर हनुमान जी बहुत ही हर्ष उल्लासित हुए। पहले तो वे बहुत ही विचार में पड गये कि राम राम की ध्वनि का तो अखड रणकार आ रहा है। स्वामीजी आ रहा है। स्वामीजी कहते हैं कि विभीषण के महल में पुरी रात राम राम की ध्वनि सुनते व्यतीत की।

प्रातःकाल चार बजे विभीषण जी जगे उसके पहले कपिराज विचार करते हैं कि—

सुगम मारग

चाहता यदि अमिति विश्राम ।
सर्वस्व समर्पण कर घनश्याम ।।
इन्द्रिय अश्व मेरे अति ही चचल ।
सारथी बुद्धि मद-मस्त निर्बल ।।
जब छोड दी उसने मन की लगाम ।
उच्छृखलता बढी उसकी हो सकाम ।।
दौडते थे अश्व सब ही धाम ।
पूर्ण करने को अपने मनोकाम ।।
देख सुन्दर रूप रमणी मन मुग्ध होकर ।
दौड पडता निर्लज्ज पतंग बन कर ।।
मृदु मनोहर गान सुनकर ।
ढूँढता फिरता उसे मृग बनकर ।।
शीतल सुगंध समीर घ्राण कर ।
मधुप इव खोजता फिरता सुगंध घर ।।
तीक्षण मधुर पक्वान्न खा कर ।
जिह्वा मीन रह जाती फँस कर ।।
कोमल उपधान परिधान परस कर ।
भव-कूप में गिर जाता मातंग बन कर ।।
अब तक नाचा मै मूढ बन कर ।
जब पुकारा मैं दीन विह्वल होकर ।।
हृदय की वेदनाओं को मिटाकर ।
एक सत ने मारग बताया दया कर ।।
बुद्धि पर आत्म-अंकुश लगाकर ।
मन को अपने वश्य में कर ।।
देख कर सुमुख युवति मनोरम ।
समझ जगज्जननी करो मन में उसे प्रणाम ।।
प्रभु दर्शन यश श्रवण मनन का अभ्यास कर ।
यही है सब मारगों में मारग सुगम तर ।।
श्रीनिवास के चरण कमलों में बाँध दो मन ।
बुद्धि से ध्यान धारण करो जनार्दन ।।
वाणी से करो श्री वेंकटेश का स्त्रोत्रगान ।
तथा अमृतसम तीर्थ मधुर प्रसाद पान ।।
करों से सेवा करो हरी की कृपा-निधान ।
कानों से श्रवण करो माधव का यशोगान ।।
नेत्रों से करो हरि-मूर्ति दर्शन हो परम साव-
धान ।
नाक से करो हरि के विलेपन सुमन तुलसी
माल्य का घ्राण ।।
कृपानिधि बालाजी की शरण में जाकर ।
सर्वस्व अपना उन्हे समर्पण कर ।।
तब प्रसन्न होंगे तुझ पर घनश्याम ।
पाएगा तू अमिति विश्राम ।।

श्री जगमोहन चतुर्वेदी.
हैदराबाद.

लका निसीचर निकर निवासा ।
यहां कहां सज्जन कर वासा ।।

इस निसीचरों की नगरी में सज्जन ने किस प्रकार अपना निवास किया होगा। ऐसे वे विचार करते हैं कि विभीषणजी जाग जाते हैं उठते ही वे रामनाम का सरण करते हैं। इसे देखकर कपिराज हृदय में बहुत ही हर्षित हुए और विभीषणजी को परम भक्त सज्जन जानकर हनुमानजी ने विचार किया कि मै इनसे परिचय करूँ जिस से कि मुझे सीताजी के निवास का पता चले। क्योंकि ये प्रभु के अनन्य भक्त है ऐसा मैने अनुभव करके देख लिया है। इससे कार्य सिद्ध हो सकेगा ऐसा दृढ विश्वास उन्हे हुआ।

गोस्वामीजी कहते हैं कि तब हनुमानजी ने एक सुन्दर ब्राह्मण का वेश बनाकर सुन्दर बचन से इस प्रकार कहने लगे—

राम राम कहवां करो जब लगि घटमें प्रान ।
कबहु के दीन दयाल के भनक पडेगी कान।।

श्री हनुमानजी के विप्र रूप में ये सुन्दर वचन सुनकर श्री विभीषणजी मनमें विचार करते हैं कि—

विप्र रूप में आकर मुझको,
किसने यह सुनाया है ।
जाकर देखु वन्दन करके,
विप्र कहा से आये हैं ।। *
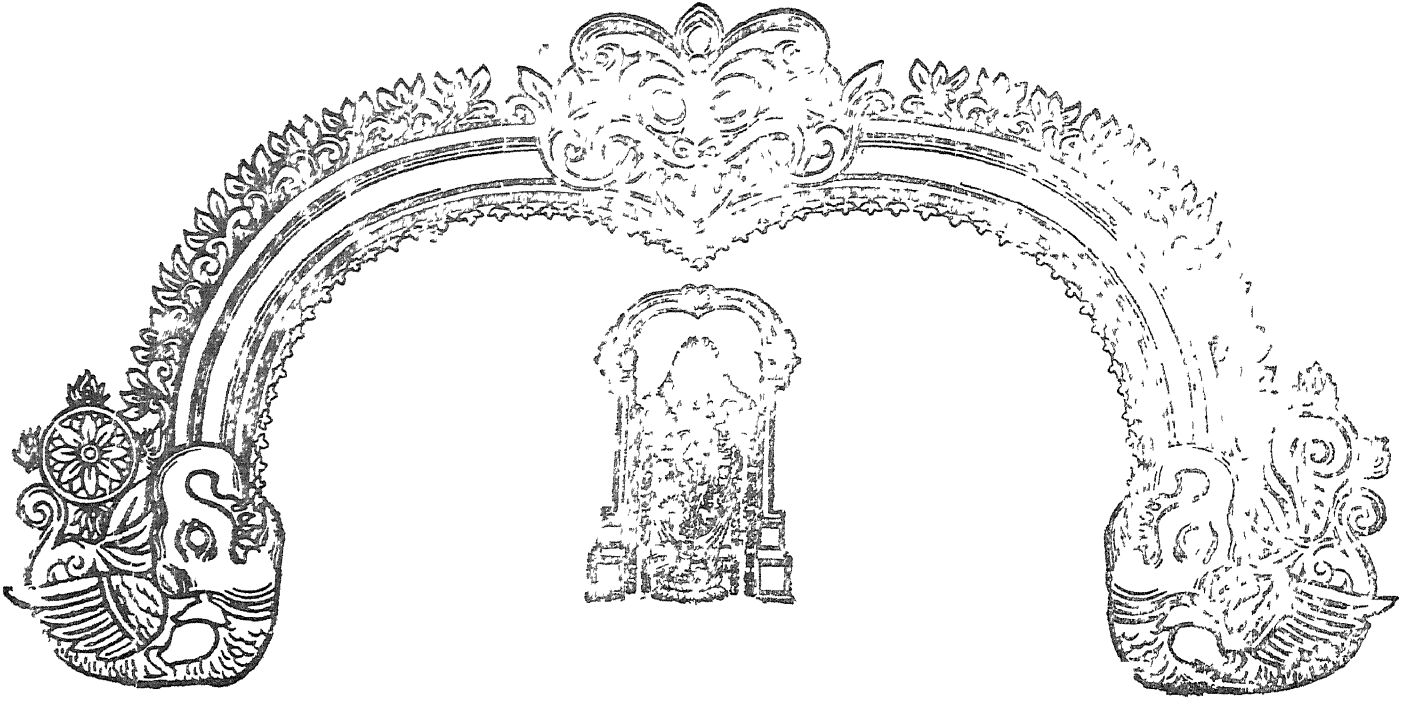
तिरुपति तथा तिरुमल यात्रा की यातायात - सुविधाएँ

भारत के किसी भी रेल्वे स्टेशन से तिरुमल तक रेल के सीधे टिकेट खरीदे जा सकते हैं। तिरुपति तक सीधी रेलगाडियों का प्रबंध भी है। जैसे कि मद्रास से (सप्तगिरि एक्सप्रेस, बडी लाइन), विजयवाडा से (तिरुमल एक्सप्रेस, बडी लाइन), काकिनाड़ा से (पेसजर गाडी बडी लाइन), हैदराबाद से (वेंकटाद्रि एक्सप्रेस, छोटी लाइन और रायलसीमा एक्सप्रेस, बडी लाइन), तिरुचिनापल्लि से (फास्ट प्रेसंजर गाडी, छोटी लाइन) पाकाला, काट्पाडि, रेणिगुण्टा तथा गूडूर जैसे रेल्वे जंक्शनों से तिरुपति तक सुविधाजनक मिली जुली रेलों का प्रबध है। भारत के किसी भी रेल्वे स्टेशन तक जाने केलिए तिरुमल से ही वापसी यात्रा का टिकेट भी खरीद सकते हैं।

मद्रास तथा हैदराबाद से तिरुपति तक नियमित विमान सेवा का प्रबध है और हवाई अड्डे से उन यात्रियों को तिरुमल तक ले जाकर फिर वापस लाने केलिए एक विशेष बस का प्रबध भी है। सुदूर प्रदेशों से रेल या बस से आनेवाले यात्रियों को तिरुमल पहुँचाने केलिए लिंक बसों का भी प्रबंध है। प्रातः काल से लेकर रात देर तक तिरुपति - तिरुमल के बीच हर ३ मिनट पर लगातार चलनेवाली बसों का प्रबध है। ए. पी. एस आर. टी. सी शाखा द्वारा तिरुपति - तिरुमल के बीच कान्ट्राक्ट कारेज बसों का प्रबंध भी है। इस में एक ट्रिप केलिए रु. १३५ देकर ४५ यात्री जा सकते हैं। तिरुपति से तिरुमल तक पैदल दो रास्ते भी हैं जो भव्य सुंदर सात पहाडियों से होते हुए है। अनेक यात्रीगण अपनी मनौती के रूप में पैदल रास्ते से आनंद उठाते जाते हैं।

तिरुपति से तिरुमल तक दो घाटी रोड हैं जिन में से एक तिरुमल जाने केलिए द्वितीय तिरुमल से लौटने केलिए हैं।

व्यक्तिगत कारों के लिए भी तिरुमल पर जाने की अनुमति है। यहाँ पर टेक्सियाँ भी मिलती हैं।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

श्री अन्नमाचार्य कलामन्दिर में बहुल द्वादशि के दिन आराधन ज्योति को प्रज्वलित करते हुए कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री प्रसादजी

तिरुपति में रु ७ लाख की लागत से निर्मित देवस्थान के नूतन अतिथिगृह का प्रारंभोत्सव देवस्थान न्यास मण्डल के अध्यक्ष डा० एन. रमेशन् के द्वारा किया गया। देवस्थान के कार्य निर्वहणाधिकारी तथा अन्य प्रमुख अधिकारियो ने कार्यक्रम में भाग लिया।

धम प्रतिष्ठान के पालक मडली का समावेश फिलहाल तिरुपति में हुआ। मडल के सदस्य श्री सोमसुन्दर स्वामी, कंचिकामकोटि पीठाधिपति, जगदगुरु शकराचार्य श्री श्री श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामी, पेजावर पीठाधिपति स्वामी श्री श्री श्री विश्वेश्वर तीर्थ, वैष्णव पीठाधिपति श्रीमन्नारायण जिय्यर, सर्वश्री चन्द्रमौलि रेड्डी (देवादाय कमिशनर) डा० रमेशन, (न्यास-मण्डल के अध्यक्ष) श्री पी वी आर के प्रसाद (कार्यनिर्वहणाधिकारी) डा० डी अर्कसोमयाजी (धर्मप्रतिष्ठान के कार्यदर्शी) महोदयो ने इस समावेश में भाग लिया।

तिरुपति में स्वामी चिन्मयानन्द

तिरुपति मे ता० ९-२-७९ से ता० १८-२-७९ तक चिन्मया मिशन के आध्वर्थ मे गीता यज्ञ सपन्न हुआ। ता० ९-२-७९ के शाम को श्री वेकटेश्वर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० शान्तप्पा इस यज्ञ के प्रारंभ समावेश के अध्यक्ष रहे। देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी आर. के. प्रसाद ने धर्म प्रबोध के विषय मे देवस्थान के कार्यकलापों को स्पष्ट किया।

श्री स्वामी चिन्मयानन्द ने अपने भाषण में कहा कि भगवद्गीता एक देश अथवा एक धर्म से संबंधित विषय नहीं है, अनेक शंकाओं से सदा भ्रम में पडे हुए विश्वमानव केलिए परमात्मा का उपदेश है।

उसके बाद ता० १८ वी तक सपन्न भाषणो में श्री स्वामीजी ने गीता के दूसरे अध्याय में हर एक श्लोक को सोदाहरण समझाया।

गीता यज्ञ के अतिम दिन श्री स्वामी जी ने कहा कि गीता में दूसरा अध्याय अन्य अध्यायो का सार है। इससे मानव अपने आध्यात्मक स्तर को बढा सकते है। विश्व प्रेम के बारे में बच्चो केलिए स्वामी जी ने जिस पुस्तक को लिखा उसकी प्रतिया बाटी गयी। इस गीता यज्ञ के निर्वहण में देवस्थान के सहयोग के प्रति श्री स्वामीजी ने अपना सतोष व्यक्त किया।

श्री स्वामी चिन्मयानंद ने श्री वेकटेश्वर कालेज के छात्र तथा अध्यापको के समावेश में भाषण दिया। आधुनिक शिक्षा विधान, विद्यार्थियों का व्यवहार, अध्यापको के कर्तव्य आदि अनेक विषयो पर उन्होंने भावभीने भाषण दिया।

क्रीडा क्षेत्र

फिलहाल ति ति देवस्थान के आध्वर्य में फुटबाल क्रीडास्पर्धाएँ सपन्न हुई। क्रीडाओ का प्रारभ एस वी यूनिवर्सिटी के रेजिस्ट्रार श्री एम जे केशवमूर्ति के द्वारा किया गया। देवस्थान के उप-कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री एन नरसिहा राव ने इस समावेश का अध्यक्षपद स्वीकार किया।

इस क्रीडा स्पर्धा में सिकदराबाद के आर्टिरी सेटर को प्रथम पुरस्कार मिल गया और तिरुपति के डैनमोस क्लब दल को दूसरा पुरस्कार मिल गया। इस पुरस्कार प्रदान कार्यक्रम के अध्यक्ष देवस्थान के पब्लिक रिलेशन्स अफीसर रहे। तिरुपति के प्रमुख पत्रिका रचयिता श्री एन.

आराधन उत्सव के अवसर पर श्री डी· पशुपति & बृन्द

वरदराजन् ने पुरस्कार प्रदान किये ।

श्री अन्नमाचार्य त्यागराज संगीतोत्सव

तिरुपति के श्री अन्नमाचार्य कलामन्दिर में ता० २५-३-७९ से ता० १.४-७९ तक श्री अन्नमाचार्य त्यागराज संगीत कार्यक्रम संपन्न होंगे ।

ता० २५-३-७९ से ता० २७-३-७९ तक श्री अन्नमाचार्य वर्धन्ति महोत्सव मनाये जायगें और बाकी दिनो में श्री त्यागराज संगीतोत्सव संपन्न होंगे ।

देवस्थान के आस्थान विद्वान तथा अन्य अनेक प्रमुख संगीत विद्वान इन उत्सवो में भाग लेंगे । इन के अतिरिक्त प्रतिदिन शाम को ३ बजे से ५ बजे तक स्थानिक कलाकारो के कार्यक्रम होंगे।

श्री वेदनारायण स्वामी की सूर्य-पूजा

पूर्वकाल में श्रीमन्नारायण ने सोमकासुर का वध कर वेदो की रक्षा कर ब्रह्मा को सौंप दिया। वही स्थल है वेदारण्य । इस कारण से ही नारायण वेदनारायण नाम से प्रसिद्ध है । सर्व साक्षी प्रत्यक्ष भगवान सूर्य मीन मास में ता० ११, १२ १३ में अर्थात ता० २५-३-७९ से ता० २७-३-७९ तक क्रमशः पहले दिन श्री वेदनारायण स्वामीजी के पादपद्मो का दूसरे दिन नाभि प्रदेश का तथा तीसरे दिन मुखपद्म का स्पर्श कर पूजा करते है।

इन तीनो दिनो में देवेरियो सहित श्री वेदनारायण स्वामीजी का प्लवोत्सव संपन्न होगा ।

ब्रह्मोत्सवो के बाद इस मन्दिर में संपन्न होने वाला प्रमुख उत्सव यही है । इस उत्सव के अवसर पर आसपास के गावों से भक्तगण यहा इकट्टे होकर स्वामी जी के दर्शन प्राप्त करेंगे ।

इतिहास से मालूम होता है कि विजयनगर के राजा श्रीकृष्णदेवराय ने अपनी माता नागलाबा की यादगार में नागलापुरम् का निर्माण करवाया ।

क्रीडा क्षेत्र

ति. ति. देवस्थान के आध्वर्य में तिरुपति में ता० २२-२-७९ से ता० २५-२-७९ तक बास्केट बाल-क्रीडा स्पर्धा मनायी गयी ।

क्रीडा स्पर्धा का प्रारंभ कल्लल मुहमद ने किया । इस समावेश के अध्यक्ष देवस्थान के विद्याधिकारी श्री बी रंगय्या रहे । इस क्रीडा स्पर्धा में १९ क्रीडादलो ने भाग लिया ।
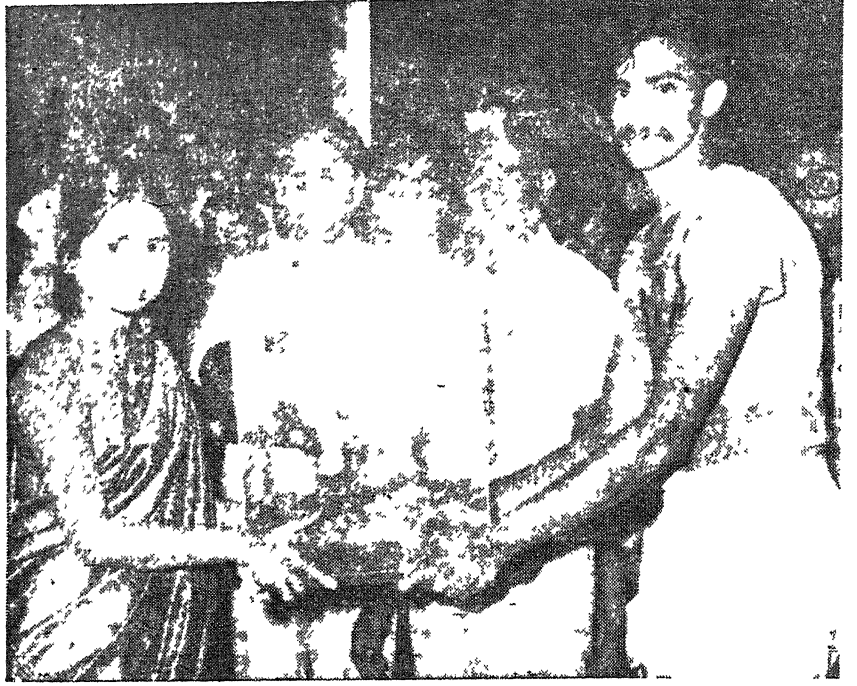
वालीबाल दल विजेता के दक्षिण भारत रेल्वे जट्टू को प्रथम पुरस्कार प्रदान करती हुई श्रीमती गोपिका प्रसाद

हैदराबाद के आर्टिलरी सेंटर दल को प्रथम पुरस्कार और कोइम्बत्तूर के लक्ष्मी मिल्स ग्रूप को दूसरा पुरस्कार मिल गये ।

अंतिम दिन के समावेश के अध्यक्ष पद को तिरुपति के पत्रिका प्रतिनिधि श्री एन वरदराजन् ने स्वीकार किया । देवस्थान के एक्जिक्यूटिव इंजनीयर श्री आर. रंगराजु ने पुरस्कार प्रदान किये ।

समाचार केन्द्र का वार्षिकोत्सव

मद्रास स्थित ति ति देवस्थान समाचार केन्द्र का वार्षिकोत्सव तथा श्री वेंकटेश्वर सुप्रभात स्पर्धा के विजेताओ को पुरस्कार प्रदान किये गये।

इस उत्सव के समावेश के मुख्य अतिथि के रूप में तमिलनाडु के न्याय शाखा के मंत्री श्री नारायणस्वामी नायुडु को आमंत्रित किया गया। समाचार केन्द्र के स्थानिक सलाहदार संघ के अध्यक्ष श्री जे बी. सोमयाजुलु ने भाग लिया।

देवस्थान के भूतपूर्व पेशकार श्री टी देवराज ने वार्षिक रिपोर्ट प्रदान की ।

देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी. आर के प्रसाद, आई ए एस. ने अपने भाषण में धार्मिक विषयों में देवस्थान के कार्यकलापो का विवरण दिया ।

सुप्रभात स्पर्धा के विजेताओ को श्री नारायण स्वामी ने पुरस्कार प्रदान किये ।

उसके बाद भक्तिमय कार्यक्रम संपन्न हुए ।

अन्नमाचार्य कीर्तनों की शिक्षणा देती हुई कुमारी शोभाराजु
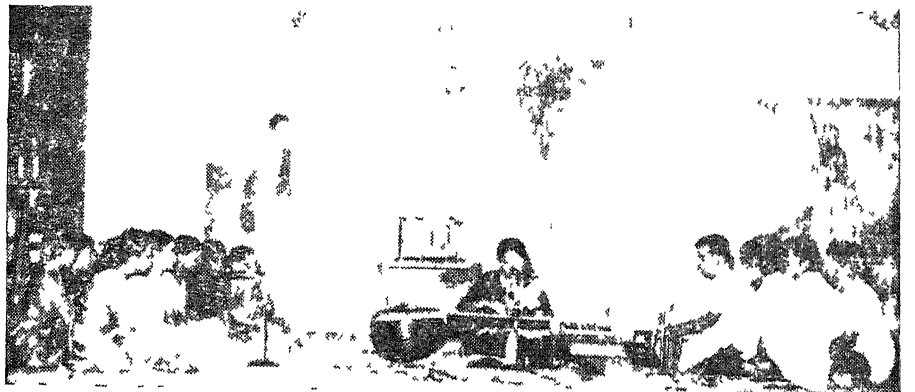
मासिक राशिफल

मार्च १९७९

*डा० डी. अर्कसोमयाजी, तिरुपति.

मेष

(अश्वनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद-१)

राहु से भय। शनि से झगडे, धन-नष्ट, तथा सतान के प्रति आदोलन। गुरु से सगे-सबधियो के द्वारा भय। कुज से विजय। बुध से शत्रुओ के द्वारा भय, मानसिक व्यथा अथवा अस्वस्थता। शुक्र से पहले २३ दिनो मे धन, मित्र तथा नूतन वस्त्र प्राप्ति मगर उस के बाद पूर्ण विरुद्ध। सूर्य से १४ दिनो तक धन, विजय तथा यश और बाकी दिनो मे अशुभ फल।

वृषभ

(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु से झगडे। शनि से धन नष्ट, सगेसबधियो से "विच्छेद अथवा झगडे। गुरु से भी मानसिक व्यथा। सूर्य से विजय, यश, धन तथा स्वास्थ्य लाभ। कुज से धन-लाभ। बुध से धन वाहन, सतान अथवा मित्र-प्राप्ति। शुक्र से भी नूतन वस्त्र व धन प्राप्ति, धार्मिक तथा प्रेम-व्यवहार।

मिथुन

(मृगशिरा पाद-३, ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु से धन-लाभ। शनि से स्वास्थ्य लाभ। धन, सेवक, घरेलू सतोष या वाहन-प्राप्ति। गुरु से धन प्राप्ति तथा विजय। शुक्र से धन, नूतन वस्त्र अथवा गृह प्राप्ति, प्रेम व्यवहार। कुज से मानसिक व्यथा तथा धन नष्ट। सूर्य से महीने के पूर्व भाग मे अस्वस्थता अथवा धन-नष्ट और दूसरे भाग मे सभी क्षेत्रो मे विजय। बुध से प्रेम-व्यवहार, धन प्राप्ति तथा शत्रुओ पर विजय।

कर्काटक

(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

राहु से दुर्व्यय। शनि से भी धन का दुर्विनियोग। गुरु से मानसिक अशाति, झगडे तथा धन-नष्ट। कुज से शरीर पर व्रण, धन नष्ट अथवा झगडे। बुध से सभी प्रयत्नो मे विघ्न। शुक्र के कारण स्त्रियो से बुराई। महीने के पहले भाग मे सूर्य से अस्वस्थता या पत्नी का असतोष और दूसरे भाग में धन नष्ट या अस्वस्थता अथवा सब कार्यो मे विघ्न।

सिंह

(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूर्व फल्गुनि)

राहु से भय। शनि से भी सगे-सबधियो से विच्छेद या सघर्ष, प्रयाण, धननष्ट गुरु से प्रयाण तथा प्रयास। कुज के कारण पत्नी से झगडे, अथवा नेत्र या उदर पीडा। बुध से विजय, नूतन वस्त्र धन अथवा सतान प्राप्ति। शुक्र से झगडे तथा अस्वस्थता। सूर्य से महीने के पूर्वार्द्ध मे प्रयाण, उदर पीडा और दूसरे भाग मे पत्नी का असतोष या अस्वस्थता।

कन्या

(उत्तरा पाद-२,३,४, हस्त, चित्त पाद-१, २)

शनि और राहु से भय। गुरु से अधिक धन लाभ। कुज से शत्रुओ पर विजय, झगडे, धन तथा गृहोपकरणो की प्राप्ति। बुध से झगडे। शुक्र से धन प्राप्ति, बडो के द्वारा प्रशसा, सगे-संबधियो का आगमन, मित्र-प्राप्ति तथा सतान प्राप्ति। सूर्य से महीने के पहले भाग मे स्वास्थ्य लाभ, शत्रुओं पर विजय तथा सतोष और दूसरे भाग मे प्रयाण या उदर पीडा।

तुला

(चित्त पाद-३, ४, स्वाति, विशाख पाद-१, २, ३)

राहु से सताप। शनि से धन, शक्ति तथा प्रेम व्यवहार। गुरु से धन नष्ट, और झगडे। कुज के कारण संतान, अस्वस्थता अथवा शत्रुओ से भय। बुध से विजय तथा गौरव। शुक्र से अच्छे मित्रो की प्राप्ति। सूर्य से महीने के पहले भाग में अस्वस्थता, शत्रुओ से कष्ट और बाद में स्वास्थ्य लाभ, सतोष तथा शत्रुओ पर विजय।

वृश्चिक

(विशाख पाद-४, अनुराधा, ज्येष्ठ)

राहु से झगडे। शनि से धन नष्ट या झगडे। गुरु से धन, विजय, खाद्यान्न, सेवक अथवा सतान प्राप्ति। कुज से बुखार या उदर पीडा अथवा रक्त प्रसरण मे दोष, और अशुभ चिन्तको के बुरे उपदेशो से नष्ट। बुध से घरेलू झगडे। शुक्र से धन, नूतनवस्त्र विजय तथा यश प्राप्ति। सूर्य से महीने के पहले भाग मे अस्वस्थता, और दूसरे भाग मे अस्वस्थता अथवा शत्रुओ से भय।

धनुः

(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१)

राहु से अधार्मिक व्यवहार। शनि से झगडे या अस्वस्थता और अधार्मिक व्यवहार। गुरु से

भी अस्वस्थता तथा प्रयाण के समय भय। कुज के कारण पुत्र अथवा अन्य अनुचित मार्ग से धन प्राप्ति। शुक्र मे धन, खाद्यान्न, यश तथा सतान प्राप्ति। बुध से भी घरेलू अशाति। सूर्य से महीने के पूर्व भाग में धन प्राप्ति तथा गौरव और शत्रुओ पर विजय, मगर बाद मे अस्वस्थता।

मकर

(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४ श्रवण, धनिष्ठ पाद-१, २)

राहु से भय। शनि के कारण पत्नी व सतान से विच्छेद। गुरु से प्रेमव्यवहार तथा सतोष। कुज से झगडे अथवा आधिकारिक भय या झगडे अस्वस्थता अथवा घर मे चोरी। शुक्र से प्रेम व्यवहार। बुध से मित्र प्राप्ति मगर अपने बुरे चरित्र के कारण आधिकारिक भय। सूर्य से महीने के पहले भाग में धन नष्ट, नेत्र पीडा या दूसरो के हाथो धोखखाना मगर बाद मे धन प्राप्ति, गौरव, तथा शत्रुओं पर विजय।

कुंभ

(धनिष्ठ पाद-३, ४, शतभिष, पूर्वाभाद्रा पाद-१, २, ३.)

राहु से झगडे। शनि से प्रयाण। गुरु से मानसिक अशाति। कुज से अस्वस्थता। शुक्र से इसका विरुद्ध। बुध से मानसिक व्यथा मगर धन प्राप्ति। सूर्य से महीने के पूर्व भाग मे अस्वस्थता या उदर पीडा अथवा धन नष्ट या प्रयाण और प्रयास, दूसरे भाग मे धन का दुर्व्यय या नेत्र पीडा वा दूसरो के हाथो धोखा खाना।

मीन

(पूर्वाभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु से धन प्राप्ति। शनि से स्वास्थ्य लाभ, विजय। गुरु से नूतन वस्त्र, या नूतन गह अथवा सतान वा वाहन और सेवको की प्राप्ति। कुज से धन का दुर्व्यय, भय, पत्नी का असतोष या नेत्र पीडा। बुध से बुरे उपदेशो से उत्पन्न झगडो केलिए धन नष्ट। शुक्र से धन, नूतन वस्त्र तथा मित्र प्राप्ति। सूर्य से महीने के पूर्व भाग मे पूर्ण विरुद्ध मगर दूसरे भाग मे धन नष्ट उदर पीडा या प्रयाण और प्रयास।

ति. ति. दे. के न्यास मण्डल के प्रमुख निर्णय

१. एन्डोमेन्ट एक्ट, १९६६ के २१ वें सेक्शन के अनुसार तिरुमल, तिरुपति तथा तिरुचानूर को 'ड्रै' एरिया के रूप में घोषित करने का निर्णय लिया गया है। इन प्रदेशों में पुण्यक्षेत्रों के समान पवित्रता तथा शांतियुत वातावरण को स्थापित करने का निर्णय लिया गया है।

२. श्री तालपाक अन्नमाचार्य के कीर्तनों के प्रचार केलिए एक विशेष विभाग खोला गया। इस कार्य केलिए एक वर्ष केलिए रु ५०,००० मजूर किये गये। यह विभाग अन्नमाचार्य प्रचार-योजना के स्पेशल अफीसर के आध्वर्य में काम करेगा जिसका कार्यालय श्री अन्नमाचार्य कलामदिर में रहेगा। इस विभाग के सभी कर्मचारी स्पेशल अफीसर के अधीन में काम करेंगे। इतना ही नहीं देवस्थान के कंठसगीत आस्थान विद्वानों से निवेदन करने का निर्णय किया गया है कि वे श्री अन्नमाचार्य कीर्तनों को स्वरबद्ध करें। साथ साथ आस्थान विद्वानों से आग्रह किया गया है कि वे वर्ष में एक बार तिरुमल पर इस कीर्तनो को भी सगीत कार्यक्रम में एक भाग समझ कर गावें। इस कार्य केलिए आस्थान विद्वानों को मामूली सभावनम् के साथ साथ रु ३,००० वस्तु रूपेण अथवा धन रूपेण दे देने का निश्चय किया गया।

३. नेल्लूर में आडिटोरियम् के निर्माण केलिए रु १ लाख मजूर किये गये।

४. पाकाला के हरिजनवाडा में श्री राम मन्दिर के निर्माण केलिए रु १०,००० मजूर किये गये।

५. तिरुचानूर स्थित जिला परिषद् हाई स्कूल के प्रांगण में देवस्थान के द्वारा एक प्रार्थना मन्दिर के निर्माण करवाने का निर्णय लिया गया।

६. चित्तूर में श्री वेंकटेश्वर कलाकेन्द्र निर्माण कमेटी केलिए सदस्य के रूप में श्री पी. आर. माधव राव मनोनीत किये गये।

७. आदोनी में आडिटोरियम निर्माण कमेटी के सदस्य के रूप में श्री महानद रेड्डी मनोनीत किये गये।

८. धार्मिक स्तोत्र, कीर्तन तथा कलाओं के प्रचार की नई योजना केलिए श्रीमती एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी ने ५ एल. पी रेकार्डों को गाने केलिए स्वीकृति दी। उन में दो कीर्तन अन्नमाचार्य के होंगे जो कर्नाटक रागों में गाये जायंगे और बाकी कीर्तन स्तोत्रों के।

९. देवस्थान न्यासमण्डल के अध्यक्ष डा० एन रमेशन के 'दि तिरुमल टेंपुल' नामक अग्रेजी ग्रन्थ की २,००० प्रतियाँ प्रचुरण करने का निर्णय लिया गया। साथ साथ इस ग्रन्थ को तेलुगु, हिन्दी तथा तमिल में अनूदित करवाने का निर्णय लिया गया। अनुवादकों को अनुभवों की समिति के मत के अनुसार पारिश्रामिक दिया जायगा। हर एक भाषा में ५०० चर्म जिल्दवाली डीलेक्स प्रतियों को प्रचुरित करवाने का निर्णय लिया गया है। जो समय समय पर तिरुपति सदर्शनार्थी गौरवनीय लोगों को भेंट किया जायगा।

EDITED AND PUBLISHED ON BEHALF OF THE T. T. DEVASTHANAMS BY K. SUBBA RAO, M.A AND PRINTED AT T T D Press, By M. Vijayakumar Reddy, Manager, T T D Press, Tirupati

चित्तूर जिले में

मुख्य मन्त्री

मुख्य मन्त्री का नारायणवनम्–आगमन। उनके साथ रेवेन्यू मन्त्री श्री जनार्दन रेड्डी, देवस्थान न्यासमण्डल के अध्यक्ष डा० रमेशन्, कार्यनिर्वाहणाधिकारी श्री पी. वी आर के प्रसाद हैं।

१९–१–७९ को तिरुमल पर शुक्रवार के अभिषेक में भाग लेकर मुख्य मन्त्री ने श्री बालाजी की आशीस प्राप्त की।

तिरुमल पर मुख्यमन्त्री के साथ देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी, न्यास मण्डल के अध्यक्ष आदि।

श्री कोदण्डराम स्वामीजी का ब्रह्मोत्सव, तिरुपति.

दिनाक	वार	प्रात	रात
२५-३-७९	रवि	—	अकुरार्पण - श्री सेनाधिपति के उत्सव
२६-३-७९	सोम	तिरुच्चि उत्सव, ध्वजारोहण	बडा शेषवाहन
२७-३-७९	मंगल	छोटा शेषवाहन	हंसवाहन
२८-३-७९	बुध	मोती के शामियाने का वाहन	सिहवाहन
२९-३-७९	गुरु	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
३०-३-७९	शुक्र	पालकी उत्सव	गरुडोत्सव
३१-३-७९	शनि	हनुमन्तवाहन शाम को वसंतोत्सव	गजवाहन
१-४-७९	रवि	सूर्यप्रभावाहन	चन्द्रप्रभावाहन
२-४-७९	सोम	रथोत्सव	अश्ववाहन
३-४-७९	मंगल	१. पालकी उत्सव— २. तिरुच्चि उत्सव	ध्वजावरोहण